ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

वैसाख-ज्येष्ठ, संवत् नानकशाही ५५१

वर्ष १२ अंक ९ मई 2019

***मुख्य संपादक* : सिमरजीत सिंह**

***संपादक* : सतविंदर सिंह फूलपुर**

***सहायक संपादक* : जगजीत सिंह**

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर साहिब-१४३००६

फोन : 0183-2553956-60

एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com

website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार	४
संपादकीय	५
जीवन-दर्शन श्री गुरु अंगद देव जी . . .	७
-डॉ. जोध सिंघ	
चड़िआ सूरजु जगु रुसनाई	१०
-डॉ. रूप सिंघ	
कीचड़ और केसर	१३
-डॉ. तारन सिंघ	
श्री गुरु अंगद देव जी : जीवन और संदेश	१८
-डॉ. हरबंस सिंघ	
जा की द्रिसटि अम्रित धार . . .	२३
-डॉ. सत्येंद्र पाल सिंघ	
श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी का विषय-वस्तु	२७
-डॉ. परमजीत कौर	
वेदना-भंडार (कविता)	३१
-श्री प्रशांत अग्रवाल	
श्री गुरु अंगद देव जी की शख़्सियत के गुण	३२
-श्रीमती राज शर्मा	
. . . श्री गुरु अमरदास जी के उपदेश	३४
-स. गुरदीप सिंघ	
श्री गुरु अमरदास जी	३७
-स. दमनजीत सिंघ	
छोटी बातें-बड़ी बातें	३९
-प्रो. शाम लाल कौशल	
. . . बाबा बंदा सिंघ बहादुर	४१
-बीबी संदीप कौर	
. . . तो बिहतर है (कविता)	४३
-स. सतिनाम सिंघ कोमल	
सिक्खों का पहला घल्लूघारा : खूनी साका काहनूंवान	४४
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'	
भगतु जो भगता ओहरी . . .	४७
-स. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा	
दुख (कविता)	४८
-डॉ. कीर्ति केसर	
ख़बरनामा	४९

Final

गुरबाणी विचार

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥
हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥
माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥
रंग सभे नाराइणै जेते मनि भवंनि ॥
जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥
जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥
आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥
साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥
हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥४॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में ज्येष्ठ मास के वातावरण और इस मास में की जाने वाली जीव-जगत की क्रियाओं की पृष्ठभूमि में मनुष्य जीवन रूपी वर्ष के इस खंड को प्रभु-नाम के व्यक्तिगत मनन और सामूहिक अथवा संगती विचार द्वारा सफल करने का सुमार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि ज्येष्ठ मास में परमात्मा से अथवा उसके नाम से जुड़ना चाहिए जिस परमात्मा के समक्ष सभी झुकते हैं अथवा जो सर्वशक्तिमान है। परमात्मा ऐसा मित्र है जिसका दामन पकड़ने से जीव को कोई बांध नहीं सकता अर्थात् यमों या मृत्यु का भय हमको भयभीत नहीं करता।

गुरु जी कथन करते हैं कि सांसारिक लोग प्राय: मोतियों को प्राप्त करना चाहते हैं और प्राप्त करके फिर वे इस संशय में चिंतित रहते हैं कि कहीं इस अमूल्य मोती को कोई चोर चुराकर न ले जाए। परमात्मा का पावन नाम ही ऐसा विशेष मोती है जिसको कोई चोरी नहीं कर सकता। मनुष्य को नाम का धारक बन कर सदीवी सुख, आनंद मिलता है। जितने भी रंग हमको अच्छे लगते हैं वे सब परमात्मा के ही रंग हैं। परमात्मा की महान इच्छा ही चारों ओर बरतती है। सब जीव वही करते हैं जो परमात्मा को अच्छा लगता है। जिन जीवों को परमात्मा ने अपना बना लिया है अर्थात् जो जीव उसकी सच्ची स्तुति में लगे हैं उनको शाबाश कहो। मात्र निज प्रयास से (यदि परमात्मा की इच्छा न हो) तो कुछ भी नहीं होता। यदि ऐसा संभव हो सकता होता तो कोई भी जीव न प्रभु-नाम से बिछुड़ता, न ही दुखी होता।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिनको साधु अथवा सतिगुरु का साथ मिल जाए वे आनंद-प्रस न्न रहते हैं। जिन मनुष्यों के मस्तक के भाग्य जागृत हो जाते हैं उनको ज्येष्ठ का ऊष्ण एवं शुष्क मास भी रंग-आनंद से भरपूर लगता है।

Final

संपादकीय

हमारा लासानी इतिहास

गुरु साहिबान इस जगत में से ईर्ष्या, द्वेष, ज़ब्र-जुल्म इत्यादि बदियों का खातिमा कर परोपकार, नेकी, दया, धर्म का राज्य स्थापित करने के लिए नेकी के रहबर बनकर आए। गुरु साहिबान ने हमेशा ही हक, सच व न्याय के मार्ग को प्राथमिकता दी। गरीबों-बेसहारों के लिए ओट-आसरा बन कर गुरु साहिबान ने जहां मानसिक रूप से गुलाम बन चुके जनमानस का सामाजिक स्तर ऊंचा उठाया, वहीं धार्मिक स्तर पर आ चुकी गिरावट को भी दूर करते हुए गुरबाणी का उच्चारण कर सबको *"अपना बिगारि बिरांना साढै ॥"* वाली आदर्श जीवन जांच के अनुसार अपना जीवन ढालने की प्रेरणा की। श्री गुरु नानक साहिब ने जनसाधारण के उद्धार के लिए गुरबाणी का उच्चारण किया, प्रचार यात्राएं कीं एवं मानवता को बदी का मुकाबला करने हेतु नाम-सिमरन द्वारा बलवान सुरत के धारक होने का उपदेश दिया। बाबर के जुल्म (बदी) के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की। उसको जाबिर कह कर संबोधित किया।

इसी विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने मानवता को अच्छे और बुरे, नेकी और बदी, विनम्रता और अहंकार, धर्म और अधर्म की पहचान करवाई और अपने से पूर्व गुरु साहिबान की गुरबाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित कर समूची मानवता को स्वतंत्र सोच प्रदान की। गुरु जी ने मानवता को गुरमति का नवीनतम सिद्धांत दृढ़ करवाया कि सबसे पहले जहां तक संभव हो सके शांतमयी ढंग से बदी का मुकाबला करना चाहिए। इस सिद्धांत को अमल में लाते हुए पंचम पातशाह जी ने तत्कालीन हुक्मरान जहांगीर द्वारा दिए असहनीय कष्ट सहन करते हुए शहादत प्राप्त की। बदी अपने जुल्म की इंतहा कर पराजित हुई।

फिर छठम् जामे में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने महसूस किया कि बदी को सख़्ती के बिना मात नहीं दी जा सकती। आप जी ने शस्त्रधारी होकर बदी के विरुद्ध चार जंगें लड़ीं। दसवें जामे में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसी विचार को और दृढ़ करते हुए *"चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ॥ हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत ॥"* का सिद्धांत दृढ़ करवाते हुए कहा कि जब बदी के विरुद्ध सभी शांतमयी उपाय खत्म हो जाएं तो कृपाण उठानी ही जायज़ है। गुरु साहिबान के दर्शाए मार्ग पर चलते हुए सिक्खों ने बदी के विरुद्ध शस्त्रबद्ध संघर्ष करते हुए अनेक साकों, घल्लूघारों के लासानी इतिहास की सृजना की। गुरु साहिबान की बख़्शिश सदका ही सिक्खों ने अपनी दो फीसदी आबादी के बावजूद अस्सी फीसदी कुर्बानियां देकर देश को आज़ाद करवाया। सबसे ज्यादा काले पानी की सज़ा भी सिक्खों ने ही काटी।

Final

इन्हीं शहादतों के प्रसंग में इस बार मई माह में आ रहा छोटा घल्लूघारा, साका पाउंटा साहिब और सरहिंद फ़तहि दिवस सिक्ख कौम के गौरवमयी, संघर्षमयी स्वरूप को रूपमान करते हैं।

इस गौरवमयी इतिहास को पढ़-सुन कर अपने पूर्वज़ों पर फख्र महसूस होता है, जिन्होंने अत्यंत कुर्बानियों से इस लासानी इतिहास को सृजित किया।

आज ज़रूरत है गुरु साहिबान और कौम के शहीदों द्वारा सृजित इस लासानी इतिहास, अमीर सिक्ख परंपराओं और सिक्ख विरासत को संभालने तथा विश्व भर में इसका प्रचार करने की। आज सिक्खों के लासानी इतिहास और शूरवीरों की गाथाओं को इतिहास के पन्नों से वंचित करने की साज़िशें हो रही हैं।

पंथ-विरोधी ताकतों द्वारा सिक्ख भावनाओं को ठेस पहुंचाने के उद्देश्य से नित्य ही कोई नया कार्य किया जाता है। गत दिवस में साऊथ अमरिका के देश चिली की राजधानी सैनटिआगो में भारत के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की मौजूदगी में श्री गुरु नानक देव जी की रूहानी गुरबाणी और मूल-मंत्र के गायन के समय नृत्य किए जाने की घटना बहुत ही निंदनीय और दुर्भाग्यपूर्ण है। जिस रूहानी गुरबाणी ने भारतीय मुर्दा आत्माओं को सुरजीत कर, मानवता को अंदाविश्वासों की दलदल में से बाहर निकाल निरोई जीवन-जाच बख़्शिश की थी आज ईर्ष्यावश वस उस रूहानी गुरबाणी पर विदेशी धरती पर जाकर नृत्य करवाना भारतीय की बदअक्ली को प्रगट करता है।

ऐसे समय में पंथ-विरोधी मनसूबों को नाकाम करने के लिए समूचे नानक नाम-लेवा और समूची सिक्ख जत्थेबंदियों का फर्ज़ बनता है कि हम *"होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ॥"* वाली आदर्श जीवन-शैली को अपनाते हुए मानवता के सामने आपसी भ्रातृ-भाव तथा पंथक एकता का सबूत पेश करते हुए अपने विचित्र इतिहास और गुरमति सिद्धांतों को विश्व भर में प्रचारने और प्रसारने के लिए लामबंद हों। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की अगुआई में पंथ-प्रवानित सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार जीवन जीते हुए उच्चतम आचरण के धारक बन कर अपनी पीढ़ी को गुरबाणी और गुरमति की अमीर विरासत के साथ जोड़ें, तभी हमारे ये शहीदी पर्व मनाने सफल होंगे और यही इन शहीदों को हमारी श्रद्धांजलि होगी।

सतविंदर सिंघ फूलपुर
फोन: +९१९९१४४-१९४८४

Final

जीवन-दर्शन श्री गुरु अंगद देव जी : धार्मिकता एवं व्यवहारिकता का सुमेल

-डॉ. जोध सिंघ*

स्वतंत्रता के पैंसठ वर्ष बाद भी भारतीय लोगों के सोचने के ढंग में कोई खास परिवर्तन नहीं आया। भाषा की समस्या, क्षेत्रवाद की समस्या, जात-पात की समस्या आज भी उतनी ही भयानक है जितनी आज से कई वर्ष पहले थी। राजनीतिक लीडरशिप ने पहले तो साधारण व्यक्ति की अनपढ़ता तथा सरलता को पूरी तरह से इस्तेमाल किया, फिर सातवें से नौवें दशक तक राजनीति के खिलाड़ियों ने धार्मिक लीडरशिप को इस दंगल में अपने साथ खींच लिया तथा सांप्रदायिक शक्तियों के नक्शे धार्मिक भावुकता के कैनवस पर उभरने शुरू हो गए। इस उभार ने जातिवाद तथा सांप्रदायिकता के झुकाव की पूरी तरह से हौसला-अफजाई करनी शुरू कर दी। धर्म, जिसको अभी तक सब प्रकार के भय समाप्त करने वाला समझा जाता था, अब हड्डियों तक भयभीत करने वाली शक्ति के रूप में अनुभव किया जाने लगा। धर्म के साथ मिलकर जात-पात की राजनीति नेताओं के हाथ में एक बहुत ही भरोसेयोग्य हथियार बन गई। हम सब जानते हैं कि भारतीय समाज, जो पहले ही बहुत सारे हिस्सों में बंटा हुआ था, उससे आगे Forward, Backward तथा Other Backward श्रेणियों में टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया।

जाति तथा वर्ण-व्यवस्था तो भारतीय जनता के लिए पहले से ही मानसिक रूप से माने हुए जीवन-मूल्यों में स्वीकार हो चुकी थी, परंतु पिछली शताब्दी के अंतिम दशकों में इसे किसी तरह वैधानिक रूप देकर और शक्तिशाली बना दिया गया, ताकि सामाजिक तथा राजनीतिक लड़ाइयों में सर्वोच्चता प्राप्त करने और अंत में राज्य या देश के केंद्र की शक्ति को हथियाने के लिए मार्ग साफ हो सके। सामाजिक तथा राजनीतिक वैज्ञानियों ने गुजरात को धार्मिकता की कुठाली बनाकर जो प्रयोग किया, इसमें उनको सफल भी समझा गया और यह प्रयोग भारत के सभ्याचारक इतिहास में बिलकुल ही नया वायुमंडल सृजित करने में सहायक हो रहा है।

नेताओं से यह आशा की जाती थी कि वे एक ऐसी चेतना पैदा करते जिसके द्वारा व्यवहारिक रूप तथा सरबत के भले के लिए काम में व्यस्त लोगों का आदर-सम्मान किया जाए। लोगों को अर्थहीन कर्म-कांडों, अंधविश्वासों की निरर्थकता के बारे में चेतन किया जाना चाहिए था, ताकि पाखंडों, रुकावटों को एक ओर रखकर वे अपना विकास कर सकते, परंतु नेता बनने के बाद इन लोगों के पास ऐसे कामों के लिए समय ही नहीं होता और इसके परिणाम हमारे सामने हैं। पुलिस-चौकियों तथा वकीलों की गिनती बढ़ गई है साथ ही अपराध भी 'दिन दुगुनी रात चौगुनी' तरक्की कर रहे हैं। हो सकता है, चोरों को पकड़ा भी जाता हो तथा उनको सजा भी दी जाती हो, परंतु चोरी करने की अंदरूनी भावनायों को बाहरी सजा से खत्म नहीं किया जा सकता। इसी तरह कानून के माध्यम से लाई गई समानता बाहर से थोपी हुई समानता तो हो सकती है परंतु ऐसी समानता हृदय एवं मन की परतों को छू नहीं सकती। धर्म वास्तव में हृदय

*१२, बसंत विहार, सरहिंद रोड, पटियाला-१४७००१, फोन : ९८१५९-१४६९१

Final

की गहराइयों तक उतरने वाली भावना है। इस तथ्य को सिक्ख धर्म ने खुलकर स्वीकार किया है तथा इसी लिए यह धर्म भीतरी समानता पर ज्यादा ज़ोर देने का यत्न करता है।

श्री गुरु नानक देव जी ने कभी भी व्यक्ति को ऊंचा या नीचा नहीं माना था। उनकी हमेशा ही इच्छा थी कि सभी को समान अवसर मिलें। व्यक्ति को समाज की सबसे महत्त्वपूर्ण ईकाई मानते हुए हम देखते हैं कि श्री गुरु नानक साहिब की बाणी में आदर्श मनुष्य को गुरमुख के तौर पर चित्रित किया गया है। श्री गुरु अरजन देव जी इसी को ही ब्रह्मज्ञानी कहते हैं। इन गुरमुखों एवं ब्रह्मज्ञानियों में से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा की सृजना की। यह खालसा पाखंडों, कर्मकांडों तथा जात-पांत के सिस्टम के झूठे अभिमान से दूर है। वास्तविकता यह है कि श्री गुरु नानक देव जी ऐसे समाज की सृजना करना चाहते थे जिसमें सुरति, मति, मन तथा बुद्धि एक-दूसरे के साथ एकसुर होकर व्यक्ति को सुंदर आदर्शक नमूने के तौर पर पेश करें।

सिक्ख धर्म के उदय से पहले समाज के कुछ खास लोगों के पास अधिकार बहुत ही ज्यादा थे। पवित्रता, विद्या-प्राप्ति तथा ज्ञान के प्रसार का अधिकार एक जाति विशेष अधिकार के नाम पर कुछ अन्य जातियों के माथे पर जड़ा हुआ था। सिक्ख धर्म ऐसे भेदभाव के खिलाफ दृढ़तापूर्वक खड़ा हुआ। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा इस मामले में लिए गए पक्ष की पूर्ति करते हुए, संगत एवं पंगत की संस्थाओं को और मज़बूत करते हुए स्पष्ट तौर पर ऐसा सिक्ख-चिंतन पक्का किया जिसमें सभी को सारे अधिकार दिए गए हैं। एक सलोक में श्री गुरु अंगद देव जी ज़ोरदार तरीके से फरमान करते हैं :

जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥
खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥
सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥
(पन्ना ४६९)

अर्थात् विद्या तथा ज्ञान-उपार्जन करना योगियों का मार्ग माना जाता है, वेदों का पाठ करना ब्राह्मणों का मार्ग माना जाता है, क्षत्रियों का जीवन-मार्ग शूरवीरता का मार्ग माना जाता है तथा दूसरों का काम अर्थात् दूसरों की सेवा करना सामाजिक, धार्मिक अगुओं द्वारा शूद्र का मार्ग माना गया है। उपरोक्त पंक्तियों में से अंतिम दो पंक्तियों में श्री गुरु अंगद साहिब स्पष्ट रूप से फरमान करते हैं कि गुरु तो उस व्यक्ति का दास बन सकता है जो समाज के बनाए हुए इन भेदभावों को न मानकर चलता है। प्रत्येक को हर प्रकार का काम करने के लिए कहा गया है। यह काम चाहे शारीरिक सेवा हो, अकादमिक हो, शूरवीरता से सम्बंधित हो और चाहे लेन-देन, व्यापार के लिए दूसरों के साथ बातचीत करने का हो। व्यक्ति की पहचान उसके वर्ण या जाति को नहीं मानना चाहिए।

समाज का इस प्रकार का बनावटी वर्गीकरण अनचाहे अहं की भावना को पैदा करता है तथा स्वाभिमान की भावना को नहीं बढ़ाता। स्वाभिमान की भावना व्यक्ति की संतोषी शख़्सियत का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होती है। सिक्ख शब्दावली में अभिमान के लिए 'हउमै' शब्द प्रयोग किया गया है। श्री गुरु अंगद देव जी इसे दीर्घ रोग कहते हैं। यह दीर्घ रोग व्यक्ति की समस्त अच्छाइयों को खा जाता है। श्री गुरु अंगद देव जी ने बहुत ही गहराई में जाकर इस मानसिक रोग के स्वरूप तथा इसके इलाज के बारे में चिंतन किया है। एक सलोक में आप फरमान करते हैं– *"हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥"* अर्थात् अहं जानलेवा, लंबा तथा बड़ा रोग है, परंतु इसका दारू (इलाज) भी इसके भीतर ही है। श्री

Final

गुरु अंगद देव जी ने जो यह विचार लोगों के सामने रखा, वो एक नया ही विचार था, जिसमें रोग को ही उसका इलाज भी मान लिया गया है। वास्तव में गुरु जी यहां यह चाहते हैं कि लोगों को बताया एवं समझाया जाए कि अहं को मनुष्य की मानसिकता से अलग कर दिया जाना चाहिए, क्योंकि यह ऐसा रोग है जिसके साथ कोई भी रहना नहीं चाहेगा। जब तक व्यक्ति को अपने रोग के बारे में पता ही न चले, तो हो सकता है कि वह लापरवाही से उसके साथ ही रहता चला जाए। जब किसी को यह पता चल जाए कि वो रोगी के रूप में इस रोग को साथ-साथ लिए फिरता है तो फिर वह उसके साथ रहना पसंद नहीं करेगा, फिर वो जल्दी से जल्दी रोग को दूर भगाना चाहेगा और किसी समझदार 'डॉक्टर' की खोज में इधर-उधर भाग-दौड़ करता रहेगा। हो सकता है कि अंत में वो इस रोग से छुटकारा पा ले। अगर वो इस तथ्य को भी स्वीकार न करे कि उसका शरीर रोगी है। जल्दी या थोड़ी देर बाद उसके शरीर के ढांचे ने लड़खड़ा कर गिरना ही होता है। अगर पहले वो अपने शरीर के सिस्टम में बीमारी के अस्तित्व को स्वीकार करेगा तो ही वह उससे छुटकारा पाने के लिए यत्न भी कर सकेगा।

इस तरह व्यक्ति अगर अहंकार को अपनी शख़्सियत का अभूषण न समझकर रोग मान ले तो फिर उसका रोग के साथ रहना असंभव हो जायेगा और वो पूरा ज़ोर लगाकर उसको अपनी शख़्सियत में से बाहर निकाल देगा। इस प्रकार अहंकार को रोग समझने के साथ यह रोग ही अहंकार का इलाज बन जाएगा। तरह-तरह के पाखंड, दिखावे तथा धन-दौलत की और ज्यादा भूख, ये सब अहंकार पैदा करते हैं जो कि जानलेवा बीमारी है। श्री गुरु अंगद देव जी आशा करते हैं कि कोई भी तंदरुस्त व्यक्ति इसको अपने साथ नहीं रखेगा।

समाज में तंदरुस्त सामाजिक तथा धार्मिक संतुलन पैदा करने के लिए श्री गुरु अंगद साहिब द्वारा दिए गए कई सिद्धांतों में 'आसा की वार' में सच्चे एवं स्वार्थी तथा झूठे प्रेम के बारे में दिया हुआ सलोक संतुलित जीवन के लिए प्रकाश-स्तंभ है। आप जी लोगों को कहते हैं कि सच्चे प्यार को व्यापार की वस्तु न बनाएं :

एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥
नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ॥
चंगै चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ ॥
आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥
(पन्ना ४७४)

अर्थात् यह परमात्मा के साथ किस तरह का प्यार है जो परमात्मा के साथ भी बताया जाता है तथा दूसरे अन्य इष्टों की ओर झुकाव भी बनाए रखता है? सच्चा प्रेमी वो है जो सदा उस एक में ही लीन रहता है। ऐसा व्यक्ति जो अपने लाभ के लिए आपके साथ काम करता रहे, मगर जब बुरे दिनों में आपसे कोई गलत काम हो जाए और वह आपका साथ छोड़कर आपको बुरा-भला कहने लगे तो ऐसे व्यक्ति को प्रेमी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वह प्रेम नहीं कर रहा होता, बल्कि लेन-देन का पूरा हिसाब-किताब रखते हुए प्यार का व्यापार कर रहा होता है। ऐसी मानसिकता वाला व्यक्ति, जो कि अपने आप को सारे प्राणियों में से ऊंचा समझता है, अपने अभिमान के माध्यम से एक ऐसे समाज की रचना करेगा, जो ठगों का, धोखेबाज़ों का तथा पाखंडियों का समाज होगा।

श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने सलोकों में समाज के ऐसे घटनाक्रम के बारे में बड़ी खुलकर चर्चा की है। इसके अलावा गुरमुखी लिपि की रचना तथा प्रचलन के कारण हमें श्री गुरु अंगद देव जी की अकादमिक सूझबूझ तथा आने वाली पीढ़ियों के प्रति उनकी जिम्मेदारी के एहसास का भी पता चलता है।

Final

चड़िआ सूरजु जगु रुसनाई

*-डॉ. रूप सिंघ**

भाई गुरदास जी ने श्री गुरु नानक साहिब के आगमन को सूर्योदय की उपमा देकर गुरु जी के आगमन की महानता को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया है। श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से संसार से भ्रम रूपी अंधेरा नष्ट हो गया और चारों तरफ सच का प्रकाश हो गया।

श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से जो प्रकाश सच के माध्यम से हुआ उसे समझने के लिए हमें श्री गुरु नानक साहिब जी के द्वारा बताये 'सच के सिद्धांत' को समझने की जरूरत महसूस होती है।

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी में अकाल पुरख को 'परम सच' माना गया है। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी में सच की ही प्रधानता है। होनी भी थी, क्योंकि धुर की बाणी, इलाही बाणी सच ही हो सकती है। यही कारण है कि आज भी यह उपदेश गूंज रहा है :

सचु की बाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला ॥ *(पन्ना ७२३)*

श्री गुरु नानक साहिब 'जपु' बाणी के आरंभ में बड़े ही संयम से परम हस्ती के गुणों का वर्णन करते हैं। परम हस्ती के गुणों को श्री गुरु नानक साहिब ने मूल-मंत्र के 'सचु' समास में अंकित किया है। मूल-मंत्र का दूसरा समास 'सतिनाम' है। 'सति' (सत्) शब्द का प्रयोग परम हस्ती के लिए किया गया है। 'सति' शब्द परम हस्ती के अस्तित्व का सूचक है। यह अस्तित्व अस्थाई नहीं, स्थाई है, परिवर्तनशील नहीं अपरिवर्तनशील है। यह अस्तित्व युगों के आरंभ से पहले भी था, अब भी है और हमेशा रहेगा।

श्री गुरु नानक साहिब परम हस्ती के सर्वदा 'सत्य' अस्तित्व को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं :

आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ (पन्ना १)

अकाल पुरख सत्य है अर्थात् सदा रहने वाला है। इस सदा अस्तित्व वाली परम हस्ती को सीमित इंद्रिय ज्ञान के द्वारा जाना नहीं जा सकता। यह परम हस्ती सर्वशक्तिमान, रचनाकार और कृपालु है। इस परम सत्य के अतिरिक्त कोई भी अन्य सांसारिक वस्तु नहीं, जो हमेशा के लिए स्थिर रहे। गुरुदेव 'जपु' बाणी में फरमान करते हैं :

सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ *(पन्ना ६)*

परम हस्ती का अस्तित्व समय और स्थान से बाहर है। यही नहीं, परम हस्ती समय पर काबू रखती है। यह सत् स्वरूप परम हस्ती कथन से परे, अति गहरी और अलेप है। श्री गुरु नानक साहिब मारू राग में परम हस्ती के इन गुणों को इस प्रकार उल्लेखित करते हैं :

तू अकाल पुरखु नाही सिरि काला ॥
तू पुरखु अलेख अगंम निराला ॥ (पन्ना १०३८)

सत्य या सच 'आदि अनील अनाद अनाहत' है। यह श्री गुरु नानक साहिब द्वारा बताये

**मुख्य सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, sikhscholar@gmail.com*

Final

सच के सिद्धांत का पहला और आधार मूलक पक्ष है।

श्री गुरु नानक साहिब के सच-सिद्धांत का दूसरा पक्ष पहले पक्ष से ही संबंधित है। यह पक्ष परम हस्ती द्वारा सृजित रचना के सत्य होने की प्रमाणिकता दर्शाता है। श्री गुरु नानक साहिब के आगमन से पहले प्रसिद्ध दर्शनवेत्ता महात्मा बुद्ध का यह सिद्धांत कि "संसार दुखों का घर है" और शंकराचार्य का यह सिद्धांत कि "संसार का अस्तित्व भ्रम-मात्र है" प्रचलित थे। आचार्य शंकर के अनुसार, "इस संसार का कोई अस्तित्व नहीं। संसार का अस्तित्व हमें इसलिए प्रतीत होता है, क्योंकि हम अंधकार में हैं।"

श्री गुरु नानक साहिब ने इन विचारों को बेबुनियाद और तर्कहीन बताते हुए 'सचु' की समस्त रचना को सच माना है। चाहे यह रचना सदा रहने वाली नहीं, परंतु जितना समय इसका अस्तित्व है, उतना समय यह भी परम सत्य की तरह ही सच्ची है। परम सत् की उपज भी सत् हो सकती है। श्री गुरु नानक साहिब 'आसा दी वार' में कर्त्ता की रचना को 'सच स्वरूप' दर्शाते हैं :

सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥
सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥
सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥ . . .
सची तेरी सिफति सची सालाह ॥
सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥ (पन्ना ४६३)

यह रचना इसलिए सत्य है, क्योंकि यह परम सत्य की उपज है। पांचवें पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी भी इस कथन की व्याख्या करते हुए फरमान करते हैं :

आपि सति कीआ सभु सति ॥
तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥ (पन्ना २९४)

श्री गुरु नानक देव जी ने कर्त्ता की रचना को सत्य मानते हुए इसमें से ही परम सत्य को पाने का उपदेश दिया। गुरु साहिब खुद समाज में रहे और अपने सिक्खों को भी ऐसा करने का उपदेश दिया। समाज में रहते हुए भी भवसागर को पार किया जा सकता है। जैसे जल में कमल का फूल तैरता रहता है, नदी में जिस प्रकार मुरगाबी रहते हुए भी अपने पंख गीले नहीं होने देती, इसी प्रकार जीव जगत में रहते हुए 'शबद' में सुरत को टिकाकर, प्रभु के नाम को रोम-रोम में बसाकर भवसागर को पार कर सकता है। इस संबंध में श्री गुरु नानक देव जी रामकली राग में हमें उपदेश करते हैं :

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥
सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥ (पन्ना ९३८)

ये वे शुभ विचार हैं जिन्होंने सिक्खों को समाज में रहते हुए अपने हक की प्राप्ति के लिए जुल्म के खिलाफ जूझने वाली कौम बनाया। यही श्री गुरु नानक साहिब के सच-सिद्धांत का प्रकटावा और दूसरा पक्ष है।

श्री गुरु नानक साहिब के सच-सिद्धांत का तीसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष शुभ अमल हैं। मनुष्य-आचरण का आधार भी शुभ अमल हैं। शुभ अमल वे हैं जिनमें कथनी-करनी की समानता हो। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा दिखाए मार्ग पर चलते हुए सिक्खों ने शुभ अमलों को धारण किया। यही शुभ अमल अर्थात् सच-आचार सिक्खों के सिर का ताज बना।

श्री गुरु नानक साहिब की बाणी के अनुसार सच्चे वे हैं जिनके मन में प्रभु का वास है अर्थात् भय है और जो सच-आचार के धारक हैं। सच्चे वे नहीं, जो सफेदपोश बन कर डेरों में बैठ जनता को लूट रहे हैं। अगर नाम-जल

Final

से स्नान किया जाए तथा किसी को धोखा न दिया जाए तभी मनुष्य प्रभु का सामीप्य पा सकता है :

सचु संजमु करणी कारां नावणु नाउ जपेही ॥
नानक अगै ऊतम सेई जि पापां पंदि न देही ॥
(पन्ना ९१)

श्री गुरु नानक साहिब ने सभी को नेक अमल करने का उपदेश दिया। हिंदू को सच्चा हिंदू बनने की सलाह देते हुए सच्चे जनऊ की पहचान करवाई। इसी प्रकार मुसलमान को सच्चा मुसलमान बनने का मार्ग बताते हुए सच्ची नमाज़, हज़ आदि के बारे में प्रकाश डाला। योगी को संतोष की मुंदरा पहनने की राय देते हुए योग का सही मार्ग दर्शाया।

श्री गुरु नानक साहिब के अनुसार हिंदू, मुसलमान या योगी होना लाभदायक नहीं, लाभदायक तो शुभ अमल हैं। कथनी और करनी की एकात्मकता तथा सच की समझ ही मनुष्य को शोभा दिलाती है :

सभना का दरि लेखा होइ ॥
करणी बाझहु तरै न कोइ ॥ (पन्ना ९५२)

जरूरत है सच्चे विचारों की और उन पर अमल करने की :

सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥

शुभ अमल ही जीवन-मार्ग है, परमार्थ का रास्ता है। इस रास्ते पर चलने के लिए सहज की आवश्यकता है। सहज का प्याला, जो निरोल सच से भरा हुआ है, उसी को मिलता है जिस पर परम सच की कृपा हो :

पूरा साचु पिआला सहजे तिसहि पीआए जा कउ नदरि करे ॥

श्री गुरु नानक साहिब के सच-सिद्धांत से अभिप्राय सच्चा कथन है, सच्चा बोल है। सवाल यह उठता है कि 'सच्चा बोल' या 'सच्चा कथन' का प्रचार महात्मा बुद्ध ने बहुत समय पूर्व कर दिया था, तो फिर गुरु साहिब के सिद्धांत की मौलिकता और विशेषता क्या हुई ?

अंतर केवल इतना ही है कि महात्मा बुद्ध ने सच-सिद्धांत दिया था, मगर वे उसे व्यवहारिक रूप न दे सके। यही अंतर है सिद्धांत और अमल (व्यवहार) का। श्री गुरु नानक साहिब के सच-सिद्धांत का तीसरा पक्ष शुभ अमल और शुभ अमलों की यथार्थकता है, जो समाज में ही परखी जा सकती है, न कि सन्यासी या भिक्षु बन कर।

श्री गुरु नानक साहिब के सच-सिद्धांत की विलक्षणता यह है कि श्री गुरु नानक साहिब ने इसे व्यवहारिक जीवन में लागू किया और दूसरों को भी ऐसा करने का उपदेश दिया अर्थात् श्री गुरु नानक साहिब ने सच बोलने के लिए उपदेश दिया और पहले खुद सच बोलकर लोगों को मार्ग दिखाया। भले ही उन्हें राजा, काज़ी, मुल्ला आदि के साथ टक्कर लेनी पड़ी और सच बोलने के कारण कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा, मगर श्री गुरु नानक साहिब कथनी और करनी का सुमेल कर रहे थे, जो पहले नहीं हो सका था। इस प्रकार श्री गुरु नानक साहिब ने सच रूपी प्रकाश से जगत को आलोकित कर दिया।

आज भी जरूरत है श्री गुरु नानक साहिब के उपदेश को व्यवहारिक रूप देने की। परमात्मा कृपा करें, हमें सद्बुद्धि प्रदान करें, ताकि हम भी गुरु साहिब के पावन सिद्धांतों को अपने जीवन में धारण कर सकें, सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर सकें और दूसरों को भी सत्य-मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर सकें।

Final

कीचड़ और केसर

-डॉ तारन सिंघ

भाई लहिणा जी श्री गुरु नानक देव जी के दर्शन करने के लिए करतारपुर आए। गुरु जी अपने धान के खेतों में काम कर रहे थे। भाई लहिणा जी वहीं चले गए। गुरु जी ने भाई लहिणा जी से कहा :

उठ आवहु तुम वहिर किदारा।
अपर बतावहिं करीए कारा।
इह नदीन के बांधहु भारा।
ले जावहु हित पसुनि अहारा ॥८५॥
लहिणे आए वहिर ततकाल।
त्रिण को बांधयों भार बिसाल।
पंक नीर नुचरत जिह माहीं।
लीन उठाइ सीस पर ताहीं ॥८६॥
जामा गुर बहु मोल पहिरयो।
पंक संग सगरो तिह भरयो।
नहिं शंका कुछ रिदे बिचारी।
गमनयो भौन भार सिर भारी ॥८७॥
ठांढे हुते पसू जिह थाईं।
तिन आगे त्रिण दीने पाई।
देख सुलखणी मन बिसमानी।
अदभुत गति किछु जाइ न जानी ॥८८॥
सीस, बदन, कर, पग, पट सारे।
रहयो पंक लग देख बिचारे।
इस को भयो अनादर भूरी।
हित कर आयो हुतो सु दूरी ॥८९॥
भई संझ बेदी कुल केत।
आए दासन युकत निकेत।
देख सुलक्खणी बचन बखाने।
करहु निरादर मनुज महाने ॥९०॥
उतम पुरख आज जो आयो।
गर जाम बहु मोल सुहायो।
तिह सिर पंक भरयो बहु भारू।
सो उचवाइ चीर कर खुआरू ॥९१॥
गुनखानी सुन बैन उचारे।
नहीं पंक संग भरयो भारे।
दीन दुनी का छत्र सु दीओ।
अपर न इह सम जग महि बीओ ॥९२॥
पंक जौन तुम को द्रिशटावा।
केसर को हम नै छिरकावा।
अब तुम देख, खरो हमनेरे।
देखो तो केसर छिरकेरे ॥९३॥
गुर कहि 'देखिओ' कहि 'प्रभु देखा'।
तुमरी गति तुम लखहु अलेखा।
भव सागर दारुन के माही।
गुर कहिं नर बहु बूडत जांही ॥९४॥
बहु नर को मलाह इह होई।
पार करहि भव सागर 'जोई'।
भूषन भई सुलखणी सुन कै।
लहणा हरखयो करना गुन कै ॥९५॥

(नानक प्रकाश, उत्तरार्द्ध, अध्याय ४७)

गुरु जी ने भाई लहिणा जी को कीचड़ से सने घास की गठरी उठवा दी, जिस कारण उनके सुंदर रेशमी वस्त्र खराब हो गए। जब गुरु जी घर आए तो माता सुलक्खणी जी ने कहा कि "आपने उस भले पुरुष (भाई लहिणा जी) का निरादर किया है।" गुरु जी ने कहा कि "उसके वस्त्र कीचड़ से नहीं खराब हुए, उन पर केसर छिड़का गया है।" सचमुच कीचड़ केसर बन चुका था।

Final

इस साखी में बड़ी गहरी रमजें ये लगती हैं-- कीचड़ क्या है? संसार कैसे कीचड़ में लथपथ था? भाई लहिणा जी भी कैसे कीचड़ से सने थे? गुरु-दृष्टि क्या कौतुक कर सकती है? केसर की भारतीय सभ्यता में क्या महानता है? केसरी रंग की सिक्खों में क्या महत्ता है? भाई लहिणा जी केसरी कैसे बने? कीचड़ केसर कैसे बन सकता है? इसका क्या तात्पर्य है? कीचड़ से सने हाथों की महानता (Philosophy of soiled hands) क्या है? सफेदपोश (White Collared) लोग क्या हैं। गुरु जी ने जो खुराक (घास) दी, वह क्या थी? भाई लहिणा जी ने वह कौन-से पशुओं को देनी थी? इसी तरह गुरु जी की अन्य साखियों में भी कीचड़, मैल, बर्तन, मरी चुहिया आदि के सांकेतिक अर्थ हैं।

कीचड़ सरोवरों और दरियाओं में होता है। श्री गुरु नानक साहिब ने जीवन को सागर और मोह को पंकज (कीचड़) माना है :

तितु सरवरड़ै भईले निवासा
पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥
पंकजु मोह पगु नही चालै
हम देखा तह डूबीअले ॥ *(पन्ना १२)*

सारा संसार कीचड़ में फंसा पड़ा है (मोह के कीचड़ में)। क्या भाई लहिणा जी इस संसार का भार उठाने के योग्य थे? गुरु जी ने सिद्ध किया कि भाई लहिणा जी संसार को इस कीचड़ सहित उठा सकते हैं, मगर उनके कपड़े कीचड़ से नहीं सनेंगे? कीचड़ उनके स्पर्श से केसर हो जाएगा। कीचड़ मोह है। सारा संसार मोह के कीचड़ से लथपथ है। पहले तो भाई लहिणा जी भी कीचड़ से लथपथ थे, खुद भी अज्ञानता के अंधेरे में रह रहे थे, परंतु गुरु-दृष्टि का कौतुक यह है कि कीचड़ केसर में बदल जाता है। श्री गुरु नानक देव जी के मिलाप के साथ भाई लहिणा जी का मोह गुरु-प्रेम और प्रभु-प्रेम में बदल गया। गुरु जी की दृष्टि ने भाई लहिणा जी को संसार का विजेता और योद्धा बना दिया। गुरु-दृष्टि का यह कर्त्तव्य है :

एक द्रिशटि तारे गुर पूरा ॥ *(पन्ना ४१३)*

गुरु की दृष्टि मानव को केसर बना देती है, भक्त बना देती है और भक्त केसरवत है :

केसरि कुसम मिरगमै हरणा सरब सरीरी चढ़णा ॥
चंदन भगता जोति इनेही सरबे परमलु करणा ॥
(पन्ना ७२१)

भक्त उसी तरह संसार को सुगंधित और सुंदर कर देता है जैसे केसर, फूल, कस्तूरी, सोना, चंदन, घी और रेशमी कपड़ा।

भारतीय सभ्यता में केसर का दर्जा बहुत उत्तम है। केसर का टीका लगाया जाता है शुभ शकुन पर बड़े-बड़े योद्धाओं, विजेताओं और महाराजाओं को।

तीन मुख्य टीके : गुरु साहिबान को गद्दी-नशीनी के समय केसर का टीका लगाया जाता था। केसर का टीका प्रमुखता का चिन्ह है। भाई लहिणा जी को केसर का टीका लग गया। श्री गुरु नानक देव जी ने आपको टीका लगाया :

नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥
लहणे धरिओनु छतु सिरि
करि सिफती अंम्रितु पीवदै ॥
मति गुर आतम देव दी
खड़गि जोरि पराकुइ जीअ दै ॥
गुरि चेले रहरासि कीई
नानकि सलामति थीवदै ॥
सहि टिका दितोसु जीवदै ॥ *(पन्ना ९६६)*

यही केसर खालसे के निशान साहिब में आया है, दसतारों में आया है। निशान साहिब चिन्ह है आचरण के उस स्तर का, जिसका प्रचार सिक्ख धर्म-स्थानों में होता है। यह चिन्ह

Final

है श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रचारे आचरण का; यह चिन्ह है आत्मिक श्रेष्ठता का। यह केसर के साथ सांकेतिक किया गया है। केसर का टीका उसे लगता है, जो इस आचरण के निशान तक पहुंचता है। भाई लहिणा जी को बख़्शा यही केसर का टीका खालसयी निशान साहिब में आया है। साथ आई है नीलाहट श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बख़्शी; साथ आई है मीरी-पीरी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की बख़्शी। श्री गुरु नानक साहिब से ही निशान साहिब का आधार बंधा। भाई लहिणा जी गुरु-दृष्टि से केसरी बन गए।

केसर भी कीचड़ में से ही उत्पन्न होता है। संसार में से ही गुरु की कृपा-दृष्टि से महापुरुष पैदा होते हैं। बंजर में से कमल पैदा हो जाते हैं।

गुरु जी ने भाई लहिणा जी को कीचड़ से भरा गास का गट्ठर इसलिए उठवाया क्योंकि गुरु जी ने जो भी परीक्षा ली उसमें मैल-कीचड़ में से पार लांघना ज़रूरी था। भाई लहिणा जी रात में वस्त्र धोने जाते हैं :

जब लहिणे प्रति सतिगुरु भाखा।
हम चादर पुरखा धो लाखा।
तबहि उठ्यो लहिणा बडभागा।
सरि महि जा पट धोवन लागा।

और क्या हुआ?

बासर अरध भाव लखयन परतू।
लखि लहिणे मन अचरज समतू।
धोइ सुकाइ चैल लै आवा।
धर सतिगुर ढिग भाल निवावा।

(नानक प्रकाश, उत्तरार्द्ध, अध्याय ५२)

भाई लहिणा जी को मैल, कीचड़ साफ करना पड़ा। इसी तरह मरी हुई चुहिया (मूखक) की मैल उठाई :

तब लहिणे दिस स्री गुर देखा।
उठहू तूही करतार पिआरे।
मूखक चाइ वहिर दिहु डारे।
आइओ बचन सुनत ततकाला।
उठ्यो उठाई तुरत बिसाला।
केतिक दूर जाइ सो डारी।
तिह छिन स्री गुर गिरा उचारी।

(नानक प्रकाश, उत्तरार्द्ध, अध्याय ५२)

यह भी एक कीचड़ था, जिसको भाई लहिणा जी ने पाक किया। कीचड़ में से बर्तन भी आपने निकाला, जब श्रीचंद और लखमी दास ने इंकार कर दिया था :

बासन गिरयो पंक के माही।
सो निकास आनहु मम पाही। . . .
तब लहिणे दिस क्रिपा निधाना।
अविलोक्यो अस बचन बखाना।
महां भाग! करदम कै माही।
जाइ निकास स्वछ कर ताही।
गुर बहु मोले चीर सुहाई।
सुण आइसु नहि देर लगाई।
कूद परयो करदम कै माही।
आइसु अनुसारी प्रन जाही।
बासन को निकास ले आवा।
माज पखारयो भला बनावा।

(नानक प्रकाश, उत्तरार्द्ध, अध्याय ५२)

भाई लहिणा जी सब तरह के कीचड़ पार कर गए। तभी तो केसर आपको ही लगाया गया।

कीचड़ से लथपथ हाथ और कपड़े संसार में महान हैं। यह किरती (श्रमजीवी) की शोभा है। किरत संसार की शोभा है। खेती कीचड़ (मिट्टी) से लथपथ हाथों से ही होती है। दुनिया में भले ही यह नीच लोगों का काम समझा जाता हो, मगर श्री गुरु नानक साहिब का फरमान है :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥

Final

नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥
जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥
(पन्ना १५)

गुरमति के अनुसार कीचड़ में काम करने वाला ही महान है न कि सफेदपोश :

--चिटे जिन के कपड़े मैले चित कठोर जीउ ॥
तिन मुखि नामु न ऊपजै दूजै विआपे चोर जीउ ॥
मूलु न बूझहि आपणा से पसूआ से ढोर जीउ ॥
(पन्ना ७५१)
--बगा बगे कपड़े तीरथ मंझि वसंन्हि ॥
घुटि घुटि जीआ खावणे बगे ना कहीअन्हि ॥
(पन्ना ७२९)

श्री गुरु नानक देव जी तो लथपथ हाथों (Soiled hands) के दर्शन के प्रचारक थे। वे खुद खेतों में काम करते। उनके हाथ (मिट्टी से) लथपथ रहते। *"जिनि पटु अंदरि"* वे अच्छे हैं।

भाई लहिणा जी ने गुरु जी की खुराक (घास) पशुवत हो गए संसारी लोगों को पहुंचानी थी। यह खुराक थी कीचड़ से लथपथ हाथों की महानता, बाणी का प्रकाश, ऊंच-नीच का भेद मिटाना। श्री गुरु नानक साहिब संसारी लोगों को प्यार करते थे। उनकी खुराक का प्रबंध आपने किया— आत्मिक, मानसिक, सदाचारक खुराक का। भाई लहिणा जी इस प्रबंध में एक कड़ी थे।

श्री गुरु नानक साहिब ने तो भाई लहिणा जी को सक्षम बनाना था। गुरु साहिब ने मुर्दा हो चुके संसार को बदलना था। यह कौतुक इस महानता का संकेत है :

दोहरा ॥
परखन हित सिक्खी तबै सांग अरंभयो भूर।
सोई साबत रहि सकै जिस पर करुना तूर।
चौपई ॥
हुती जु दूर उजाड़ बिसाला।
पहुंचे ले सिख संग क्रिपाला।
तहा सिढ़ी पर शव इक देखा।
ऊपर अंबर सेत बिसेखा।
केतिक काषट परे समीपा।
भए ठांढ बेदी कुल दीपा।
सरब सिख तब आन पहूंचे।
तिनहि सुनाइ भने बच ऊचे।
"जे तुम हमरे सिख कहावहु।
मानउ बचन न सदन सिधावहु।
परयो सिढ़ी पर शव इह खावहु।
जे नहिं खावउ तउ पछुतावउ।" . . .
लहिणा सुनत फिरयो चहुं फेरे। गुरू कहयो किउ लाई डेरे?
जित दिस हुकम करो तिह खावों। इस रजाइ हित बिलम लगावउं।

परंतु हुआ क्या?

"सेत सु बसत्र उतारा जब ही। देखयो सरब तिहावल तब ही।"

यह तो त्रिभोला कड़ाह प्रसादि था। इस साखी में बड़ी बात यह है कि भाई लहिणा जी को गुरु-दृष्टि ने इतना सक्षम बना दिया था कि वे संसार को जीवन दे सकते थे।

मुर्दा कौम, देश और संसार के अनेक चिन्ह बाणी में बताए गए हैं, जैसे :

१. अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥
(पन्ना ४६९)
२. जे जीवै पति लथी जाइ ॥
सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ (पन्ना १४२)
३. घरि घरि मीआ सभनां जीआं बोली अवर तुमारी ॥ (पन्ना ११९१)
४. अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥
(पन्ना ४७१)
५. नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥
(पन्ना ४७२)

Final

६. अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥ (पन्ना ४७२)
७ कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥ (पन्ना ४७१)
८ माणस खाणे करहि निवाज ॥ (पन्ना ४७१)
९. सरम धरम का डेरा दूरि ॥ (पन्ना ४७१)
१०. थानसट जग भरिसट होए . . . ॥(पन्ना ६६२)
११. देवल देवतिआ करु लागा ऐसी कीरति चाली ॥ (पन्ना ११९१)
१२. अगदु पड़ै सैतानु वे लालो ॥ (पन्ना ७२२)
१३. खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही ॥ (पन्ना ६६३)
१४. लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ॥ (पन्ना ४६८)
१५. कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥ (पन्ना १४५)

जिस कौम में यह गिरावट आ जाए, वह मुर्दा है। जहां आचरण, सदाचार, सभ्याचार, धर्म, राजनीतिक स्वतंत्रता न हो, वहां कौम मुर्दा ही है। भारतीय लोगों में स्वाभिमान नहीं था। यही मुर्देपन की निशानी है। इस मुर्दा लाश को त्रिभोली शक्ति, पवित्रता, बल, दबाव, सम्मान स्वीकार करने थे। गुरु साहिबान का यही कर्त्तव्य था। यही भाई लहिणा जी ने सामर्थ्य बतानी थी कि वे मुर्दा भारत में शक्ति पैदा करेंगे। यही परख थी। यही यह साखी है।

ये साधारण-सी साखियां गहरे अर्थ देती हैं। ये बाणी के गुरु-पद की व्याख्या करती हैं:-

(अ) गुरु ने मुर्दा संसार को बलवान, पवित्र और ज़िंदगी भरपूर बनाना है।

(आ) गुरु ने संसार का कीचड़ साफ करना है और संसार को विजयी योद्धा बनाना है।

(इ) गुरु ने संसार की मैल साफ कर देनी है और संसार में दोपहर जैसा ज्ञानमयी प्रकाश फैला देना है। जैसे-जैसे कोई गुरु वाला होता जाता है, उसके हृदय में *"चमकार बीजल तही"* होती जाती है, अंदर ज्ञान का प्रकाश आ जाता है। गुरु के वस्त्र धोए और प्रकाश हो गया।

(ई) गुरु की दृष्टि से सिक्ख का मन इतना निर्मल हो जाता है कि वहां कोई मूखक (चूहा) नहीं रह सकता। कामादिक सब चूहे हैं, जो अंदर शोर मचाते हैं और प्राणों की रस्सी को काटते रहते हैं। गुरु की दृष्टि हो जाए तो ये चूहे मर जाते हैं। भाई लहिणा जी ने चुहिया बाहर फेंक दी।

(उ) गुरु की दृष्टि हो जाए तो बर्तन स्वच्छ, निर्मल और पवित्र हो जाता है। यह बर्तन भाई लहिणा जी का साफ किया हुआ (चुबच्चे में से निकाला गया) है :

—भांडा धोइ बैसि धूपु देवहु तउ दूधै कउ जावहु ॥ (पन्ना ७२८)
—जिन कउ भांडै भाउ तिना सवारसी ॥ (पन्ना ७२९)
—भांडा हछा सोइ जो तिसु भावसी ॥
भांडा अति मलीणु धोता हछा न होइसी ॥ (पन्ना ७३०)

गुरु-स्पर्श से मुर्दा संसार सुरजीत होता है, मैला मन निर्मल होता है, कामादिक पर विजय प्राप्त होती है और अज्ञान का नाश होता है। श्री गुरु नानक साहिब ने जिसको गुरुआई देनी थी, उसमें यह सामर्थ्य पैदा करना था और उसके इस सामर्थ्य की परीक्षा भी लेनी थी।

भाई लहिणा जी में यह सामर्थ्य केवल एक दिन में ही पैदा नहीं हो गया था। आप कई वर्ष गुरु जी के पास रहे, कम से कम सात वर्ष। आपने गहरी श्रद्धा के साथ गुरु जी को प्रेम किया। गुरु-पुत्र उस दर्जे तक न पहुंच सके जिस पदवी तक आप पहुंच गए। आप कीचड़ से केसर हो गए।

Final

श्री गुरु अंगद देव जी : जीवन और संदेश

-डॉ हरबंस सिंघ*

श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी चार उदासियों के समय देश-विदेश में विभिन्न स्थानों पर जाकर लोगों को प्यार और अमन का संदेश दिया। आप जी ने खोखले कर्म-कांडों, रीति-रिवाज़ों और जात-पात के विभाजन की कड़ी आलोचना की। आप जी ने फरमाया कि हम सभी एक ईश्वर की संतान हैं। सभी मनुष्य बराबर हैं। कोई भी मानव जाति, जन्म व रंग के कारण निम्न या श्रेष्ठ नहीं हो सकता। मनुष्य की खासियत तो उसके शुभ गुणों और अच्छे कर्मों पर निर्भर करती है। आप जी ने नाम जपने, किरत (मिहनत) करने और बांट कर छकने पर ज़ोर दिया। आप जी १५३९ ई में भाई लहिणा जी अर्थात् श्री गुरु अंगद देव जी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर करतारपुर साहिब में (वर्तमान पाकिस्तान में) ज्योति-जोत समा गए। भाई गुरदास जी लिखते हैं :

थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ।
जोती जोति मिलाइ कै सतिगुर नानकि रूपु वटाइआ।
लखि न कोई सकई आचरजे आचरजु दिखाइआ।
काइआ पलटि सरूपु बणाइआ ॥ (वार १:४५)

श्री गुरु अंगद देव जी को गुरुआई दिए जाने की अद्वितीय घटना को भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी ने इस तरह बयान किया है :

लहणे धरिओनु छत्रु सिरि
करि सिफती अंम्रितु पीवदै ॥
मति गुर आतम देव दी
खड़गि जोरि पराकुइ जीअ दै ॥
गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥
सहि टिका दितोसु जीवदै ॥ (पन्ना ९६६)

श्री गुरु अंगद देव जी ने सन् १५३९ से लेकर १५५२ ई तक सिक्ख धर्म का नेतृत्व किया। आप जी का गुरु-काल का समय सिक्ख इतिहास के लिए बड़ी प्राप्तियों का समय है, जिसकी अमर छाप आज भी देखी और महसूस की जा सकती है। आप जी ने न केवल श्री गुरु नानक देव जी की बाणी और विचारधारा को ही प्रचारित करने का यत्न किया, बल्कि उन सिक्ख संस्थाओं और परंपराओं को भी मज़बूत किया, जिनकी नींव श्री गुरु नानक देव जी रख गए थे। उन्होंने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित बाणी को संभाला। उसे गुरमुखी अक्षरों में लिपिबद्ध किया। श्री गुरु नानक देव जी की जन्म-साखी लिखवाई। संगत, पंगत और कीर्तन की मर्यादा को मज़बूत किया।

श्री गुरु अंगद देव जी का प्रकाश (जन्म) सन् १५०४ ई में माता दइआ (दया) कौर जी (माता सभराई जी) और बाबा फेरू मल्ल जी के गृह में गांव सराय नागा (मत्ते दी सरां), ज़िला श्री मुकतसर साहिब में हुआ था। इनके पूर्वज गांव मंगोवाल, ज़िला गुजरात (वर्तमान पाकिस्तान) के रहने वाले थे। बाबा फेरू मल्ल जी दुकानदारी का काम करते थे। ये गांव के

*४८४०, गली नं. ४४, राघवपुरा, करोल बाग, नई दिल्ली- ११०००५, फोन : ०११-६५५८५३९५

Final

चौधरी तखत मल्ल और फिरोज़पुर के स्थानीय पठान हाकिम का हिसाब-किताब भी संभालते थे। जब बाबर ने हिंदोस्तान पर हमले करने शुरू किए तो इनका गांव उजाड़ दिया गया। बाबा फेरू मल्ल जी अपने परिवार के साथ पहले गांव हरीके पत्तण, फिर गांव संघर और फिर खडूर साहिब आकर बस गए। आप देवी-भक्त थे और हर साल देवी-भक्तों का जत्था लेकर देवी के दर्शन को जाया करते थे। घर के इस धार्मिक माहौल का प्रभाव इनके सुपुत्र भाई लहिणा जी पर भी पड़ा। सन् १५२६ में जब बाबा फेरू मल्ल जी अकाल प्रस्थान कर गए तो भाई लहिणा जी भी देवी-भक्तों का जत्था लेकर ज्वालामुखी जाने लगे।

इन्हीं दिनों भाई लहिणा जी ने गांव के एक गुरसिक्ख भाई जोध जी से श्री गुरु नानक देव जी की बाणी सुनी तो मन में उनसे मिलने की इच्छा पैदा हुई। १५३२ ई में जब वे जत्थे के साथ देवी के दर्शन के लिए जा रहे थे तो करतारपुर के स्थान पर उनकी मुलाकात श्री गुरु नानक देव जी के साथ हुई। आप श्री गुरु नानक देव जी की शख़्सियत और उनकी विचारधारा से इतने प्रभावित हुए कि जत्थे के साथ आगे जाने का विचार छोड़ दिया। आप जी ने अपने साथियों से कह दिया कि अब हमें कहीं और जाने की ज़रूरत नहीं। हमें जिस सच्चे गुरु की तलाश थी, वह सच्चा गुरु मिल गया है। 'बंसावलीनामा' के कर्त्ता भाई केसर सिंघ छिब्बर लिखते हैं :

मनु प्रसंनु पेखत ही हूआ।
मिटि गिआ भ्रम-तम का कूआ।
प्राते साथु भइआ तयारु।
इह आए दरसन कउ 'गुरू नानक' के दुआरि।

साथी कहें :

'चल देवी दुआरे।'

इन्होंने कहा :

'कारज रास' हूए हमारे ॥

भाई लहिणा जी सात साल (१५३२-१५३९ ई) श्री गुरु नानक देव जी और संगत की सेवा में रहे। आप जी ने पूर्ण समर्पण-भाव तथा निष्काम भावना से जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी और संगत की सेवा की आप श्री गुरु नानक देव जी का ही रूप हो गए। ज्योति-जोत समाने से पहले श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी ज्योति को भाई लहिणा जी में टिका कर उनको श्री गुरु अंगद देव जी के रूप में अपनी जगह स्थापित कर दिया। भाई गुरदास जी लिखते हैं :

गुरु अंगदु गुरु अंगु ते अंम्रित बिरखु अंम्रित फल फलिआ।
जोती जोति जगाईअनु दीवे ते जिउ दीवा बलिआ।
(वार २४:८)

श्री गुरु नानक देव जी का यह चयन सिक्ख धर्म के विकास और इतिहास में महत्त्वपूर्ण कदम साबित हुआ। श्री गुरु नानक देव जी ने गुरु-पदवी को ज्योति के साथ जोड़ दिया और यही ज्योति दसवें पातशाह के बाद शबद-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में प्रकट हुई।

एक वर्तमान इतिहासकार डॉ. ए सी. बैनर्जी श्री गुरु नानक देव जी के इस कदम की प्रशंसा करता हुआ लिखता है :-

By nominating Angad as his successor. (Guru Nanak) established a precedent and initiated a tradition which moulded the Sikhs into an integrated community under uninterrupted spiritual leadership as nothing else have done.

Final

श्री गुरु अंगद देव जी ने करतारपुर साहिब की जगह खडूर साहिब को सिक्खी-प्रचार का केंद्र स्थापित किया। भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी रामकली की वार में इस बात का ज़िक्र करते हैं :

फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥
जपु तपु संजमु नालि तुधु होरु मुचु गरूरु ॥
(पन्ना ९६७)

खडूर साहिब रहते हुए आप संगत को रोज़ाना श्री गुरु नानक देव जी की बाणी का उपदेश देते, शबद की व्याख्या करते और व्यवहारिक जीवन में अच्छे व शुभ गुणों को ग्रहण कहने की प्रेरणा देते। खडूर साहिब में आई संगत की देखभाल और उनके सुख-आराम का ध्यान उनकी सुपत्नी माता खीवी जी रखते। आप बड़े मीठे स्वभाव के थे। भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी ने आप जी की तुलना सघन पत्तों वाले छायादार वृक्ष से की है, जिसके नीचे बैठ कर हर राही को सुख और आराम मिलता है। माता खीवी जी द्वारा चलाए जा रहे लंगर की भी भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी ने बहुत प्रशंसा की है :

बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली ॥
गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥
(पन्ना ९६७)

श्री गुरु नानक देव जी ने स्त्री जाति को समाज में सम्मानजनक स्थान देने की बात की थी। माता खीवी जी ने सिक्ख समाज में इस सम्माननीय स्थान की पहली उदाहरण पेश की। सिक्ख धर्म के विकास में आप जी का बहुत बड़ा योगदान है।

श्री गुरु अंगद देव जी के दो सुपुत्र-- बाबा दासू जी व बाबा दातू जी और दो सुपुत्रियां-- बीबी अमरो जी व बीबी अनोखी जी थीं। माता खीवी जी और श्री गुरु अंगद देव जी की शख़्सियत एवं शिक्षा का गहरा प्रभाव बच्चों के जीवन पर प्रत्यक्ष था। ये बीबी अमरो जी ही थे, जिनसे श्री गुरु नानक पातशाह की बाणी सुनकर श्री गुरु अमरदास जी गुरु-घर के साथ जुड़े थे और फिर अपनी सेवा, आस्था एवं बंदगी के कारण श्री गुरु अंगद देव जी का ही रूप हो गए थे।

खडूर साहिब में रहते हुए श्री गुरु अंगद देव जी ने सिक्खी-प्रचार को मुख्य रखकर सुलतानपुर तक कई गांवों का दौरा किया। आप कुछ समय मालवा क्षेत्र में भी विचरते रहे। आप लोगों को यही उपदेश देते थे कि परमात्मा सारे मनुष्यों में समाया हुआ है। ऐसे में किसी मनुष्य को बुरा नहीं कहना चाहिए :

आपि उपाए नानका आपे रखै वेक ॥
मंदा किस नो आखीऐ जां सभना साहिबु एकु ॥
(पन्ना १२३८)

उस मालिक की कृपा के पात्र बनने के लिए आत्मसमर्पण और सेवा जैसे गुणों का होना जरूरी है। आप जी का फरमान है :

चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥
गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥
आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥
नानक जिस नो लगा तिसु मिलै
लगा सो परवानु ॥ *(पन्ना ४७४)*

श्री गुरु अंगद देव जी ने अपनी मातृ-भाषा पंजाबी के प्रचार और प्रसार के लिए बड़ा काम किया। बच्चों के लिए गुरमुखी अक्षरों में बाल बोध पुस्तिका तैयार करवाई और खडूर साहिब में पंजाबी पाठशाला स्थापित की। आप दिन का ज्यादा समय बच्चों के साथ

Final

बिताया करते थे। आप जी ने प्रभु-सिमरन के साथ-साथ शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए मल्ल अखाड़ों की भी स्थापना की। समय पाकर सिक्ख अच्छे घुड़सवार, शस्त्रधारी और निर्भय योद्धा बन गए।

श्री गुरु अंगद देव जी पहर रात रहती उठते। दरिया ब्यास के ठंडे और निर्मल जल से स्नान करते और फिर प्रभु-सिमरन में जुड़ जाते। इसके बाद आप संगत में आकर 'आसा की वार' का कीर्तन श्रवण करते और आई हुई संगत को गुरसिक्खी का उपदेश देते। दीवान की समाप्ति के बाद आप शारीरिक रूप से रोगियों की देखभाल करते और फिर आराम करने चले जाते।

बेशक गुरु के लंगर में हर प्रकार के पदार्थ तैयार और पंगत में वितरित किए जाते थे, परंतु श्री गुरु अंगद देव जी का अपना भोजन और पहनावा बहुत सादा हुआ करता था। आप जी ने संगत की तरफ से आई चढ़त को कभी भी घर की ज़रूरतें पूरी करने के लिए इस्तेमाल नहीं किया था। आप अपने घर का खर्च मूंज की रस्सी बना, बेचकर चलाया करते थे। 'बंसावलीनामा' में भाई केसर सिंह छिब्बर लिखते हैं :

वाणु वटि करन गुजरान।
बिना आपणी किरत
धान बिगाना ना खाणु।

इसी संबंध में डॉ हरी राम गुप्ता लिखते हैं-- "Guru Angad did not live on the offerings of the Sikhs. He earned his living by twisting coarse grass (munj) into strings used for making a cot." आप संगत के पैसे को गुरु-घर की अमानत समझते थे और उस पैसे को लंगर चलाने तथा सिक्ख धर्म के प्रचार के लिए ही इस्तेमाल करते थे।

१५४० ई में मुगल बादशाह हुमायूं, शेरशाह सूरी से चौसा और कन्नौज (बिलग्राम) की लड़ाई में हार खाने के बाद लाहौर जाता हुआ खडूर साहिब रुका। वह दिल्ली और आगरा का तख़्त पुन: हासिल करने के लिए श्री गुरु अंगद देव जी से आशीर्वाद लेने आया था। गुरु जी उस समय बच्चों को पढ़ाने में व्यस्त थे। आपने बादशाह की तरफ विशेष ध्यान न दिया। इसे अपना अपमान समझ कर हुमायूं ने गुरु जी को सज़ा देने के लिए म्यान में से तलवार निकाल ली। गुरु जी ने भगौड़े बादशाह की तरफ देखा और मुस्करा दिए। उन्होंने बड़े निडर स्वर में कहा-- "तेरी यह तलवार शेरशाह के सामने कहां थी? उससे हार खाकर तू भाग आया है और अब अपनी तलवार का ज़ोर हम फकीरों को दिखाना चाहता है!" गुरु जी की बेबाक होकर कही बात सुन कर हुमायूं शर्मिंदा हो गया।

गुरु जी का हृदय बड़ा कोमल और प्यार-भावना से भरपूर था। आप बहुत बलवान और विशिष्ट प्रतिभा के मालिक थे। श्री गुरु नानक देव जी के संपर्क में आने और उनकी विचारधारा में रंगे जाने के बाद आप जी की प्रतिभा पूर्ण आनंद में शिखर पर आ गई थी। श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा का प्रभाव श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी पर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

आप जी की कुल बाणी ६३ सलोक हैं, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब की २२ वारों में से १० वारों में दर्ज हैं। आप जी की बाणी में गुरु-प्रेम, गुरु-भक्ति, प्रभु-मिलाप, प्रभु-प्राप्ति के साधन, आत्मसमर्पण और आत्मविश्लेषण जैसे विषय प्रधान हैं। आप जी की सारी बाणी सरल और

Final

स्पष्ट भाषा में लिखी हुई है। आप जी की बाणी में समय, समाज और राजनीतिक हालात के संकेत भी दर्ज हैं :

नाउ फकीरै पातिसाहु मूरख पंडितु नाउ ॥
अंधे का नाउ पारखू एवै करे गुआउ ॥
इलति का नाउ चउधरी कूड़ी पूरे थाउ ॥
नानक गुरमुखि जाणीऐ कलि का एहु निआउ ॥
(पन्ना १२८८)

श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने कई सलोकों के माध्यम से पंजाब की लोकधारा की पृष्ठभूमि और प्रचलित मुहावरों के माध्यम से जीवन की अटल सच्चाइयों को रूपमान किया है। श्री गुरु अंगद देव जी के समय के प्रमुख सिक्खों में से बाबा बुड्ढा जी, भाई सत्ता जी, भाई बलवंड जी के अलावा भाई मरदाना जी के पुत्र भाई शहजादा के अलावा भाई जीवा, भाई गुज्जर लुहार, भाई धिंड, भाई पारो जुलका, भाई मल्लू शाह, भाई किदारी, भाई दीपा, भाई नरैण दास, भाई बूला, भाई लालू, भाई दुरगा जीवंदा, भाई जग्गा धरणी, भाई खानू माईआ, भाई गोविंद और भाई जोध रसोइए का नाम बड़े आदर के साथ लिया जा सकता है, जिन्होंने सिक्खी के प्रचार और प्रसार के लिए गुरु-घर की बहुत सेवा की।

श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी की बाणी सेवा-संभाल की, जिसके द्वारा यह पावन बाणी श्री गुरु अमरदास जी और श्री गुरु रामदास जी के हाथों से गुज़रती हुई श्री गुरु अरजन देव जी तक पहुंची।

श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी का संदेश सारी मानव जाति के लिए एक जैसा और कल्याणकारी है। ईश्वर की बंदगी और प्रभु-प्रेम के सामने दुनिया के पदार्थों और सांसारिक महानता का कोई मूल्य नहीं। आप फरमान करते हैं :

नानक दुनीआ कीआं वडिआईआं अगी सेती जालि ॥
एनी जलीईं नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥
(पन्ना १२९०)

आप जी को ईश्वर के पिता-पालक वाले स्वभाव पर पूर्ण विश्वास था। मनुष्य तो यूं ही रोज़ी-रोटी की तलाश और पदार्थों की दौड़ में भागा फिरता है। गुरु जी फरमान करते हैं :

नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ ॥
जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥
(पन्ना ९५५)

जिन्होंने अपने मन में प्रभु को बसाया है और सच्चे मन से उसकी सेवा में लग गए हैं, उनकी सभी चिंताएं दूर हो जाती हैं। उनके घर सदा ही बसंत जैसा आनंद और खुशी बनी रहती है :

नानक तिना बसंतु है जिन्ह घरि वसिआ कंतु ॥
जिन के कंत दिसापुरी से अहिनिसि फिरहि जलंत ॥
(पन्ना ७९१)

श्री गुरु अंगद देव जी ने तेरह साल तक गुरुआई की ज़िम्मेदारी को बहुत सफलता के साथ निभाया। आप जी का समय सिक्ख धर्म के विकास में महत्त्वपूर्ण कड़ी है। २९ मार्च, सन् १५५२ को जब आप ज्योति-जोत समाए।

Final

जा की द्रिसटि अंम्रित धार . . .

*–डॉ. सत्येंद्र पाल सिंघ**

परमात्मा जिनको जीवन जीने के सूत्र की समझ देता है उन्हें उस सूत्र के रूप में अथाह शक्तियों का भंडार प्राप्त हो जाता है। इस भंडार से जब गुण निकलते हैं और वे मानवीय मूल्यों की रक्षा में समर्थ होते हैं तो लोग पारब्रह्म के दरबार में सम्मान पाते हैं। श्री गुरु अंगद देव जी ने अपनी सामर्थ्य को गुणों में बदल कर सतिगुरु की कृपा पाई, जिससे संसार में सेवा और समर्पण का महान आदर्श स्थापित हुआ। यह आदर्श सिक्ख पंथ का आधार साबित हुआ। श्री गुरु अंगद देव जी का जीवन और उनकी बाणी दोनों ही सरलता का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधित्व करते हैं। सारे ही गुरु साहिबान की यह विशिष्टता रही है कि उनकी बाणी में उनके जीवन को और उनके जीवन में उनकी बाणी को सहज ही देखा जा सकता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी उनके जीवन के साथ-साथ चलती है। गूढ़ आध्यात्मिक तत्वों को सहज और सामान्य विधि से प्रकट कर देना अद्भुत है। श्री गुरु अंगद देव जी जब श्री गुरु नानक देव जी से मिलने करतारपुर गए तो प्रथम दर्शन में ही ऐसे भाव-विभोर हुए कि गुरु के होकर वहीं रह गए।

परमेश्वर यदि प्रिय लग रहा है और उससे प्रीति हो गई है तो प्रीति ऐसी हो कि मनुष्य अपना सर्वस्व उसे भेंट कर दे; उसके और अपने बीच के अंतर को मिटा दे; उसमें अभेद हो जाए; अपने को उसकी इच्छा के अधीन कर दे। जब मनुष्य का अपना स्व मिट जाएगा तो जीवन में बस, परमात्मा ही रह जाएगा। यही जीवन का सदुपयोग है। यदि जीवन ऐसा नहीं है तो यह सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। श्री गुरु नानक साहिब के दरबार में श्री गुरु अंगद देव जी, जिनका नाम उस समय भाई लहिणा जी था, यही संकल्प लेकर आए थे कि *"जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥"* अर्थात् जो सुखों का दाता है, जिसकी सेवा भवसागर से उबार लेने वाली है, उसमें सदा-सर्वदा के लिए लीन हो जाना चाहिए। जब कई दिन बीत गए तो श्री गुरु नानक देव जी ने स्वयं उन्हें अपने परिवार, कार्य-व्यवहार का प्रबंध देखने के लिए अपने घर जाने का आदेश दिया। श्री गुरु अंगद देव जी गुरु साहिब की आज्ञा मान अपने घर खडूर साहिब वापिस आ गए। सारे प्रबंध करने के बाद वे शीघ्र ही करतारपुर आ गए और पुनः गुरु-सेवा में लग गए।

गुरु की प्रीति में अपनी कोई इच्छा नहीं होती और न ही कोई मांग होती है। गुरु की इच्छा ही अपनी इच्छा होती है और गुरु जो दे देता है उसी में तृप्ति हो जाती है :

सचा भोजनु भाउ सतिगुरि दसिआ ॥
सचे ही पतीआइ सचि विगसिआ ॥
सचै कोटि गिरांइ निज घरि वसिआ ॥
सतिगुरि तुठै नाउ प्रेमि रहसिआ ॥ (पन्ना १४६)

परमात्मा से प्रीति कैसे हो तथा इस प्रीति में जीवन कैसा हो, इसका ज्ञान सतिगुरु से ही मिलता है। इस प्रीति में ही जीवन सार्थक होता है और सुख मिलता है। परमात्मा की प्रीति में जीवन जीते हुए ही जीवन का मूल उद्देश्य प्राप्त

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: ९४१५९-६०५३३*

Final

होता है। सतिगुरु की कृपा होती है तभी यह प्रीति दृढ़ और आनंददायक बन जाती है। श्री गुरु अंगद देव जी जब खडूर साहिब से वापिस आए तो श्री गुरु नानक देव जी के दर्शन करने उनके खेतों में चले गए, जहां वे धान की फसल की देखरेख करने गए हुए थे। खेतों से वापिस आते हुए श्री गुरु नानक देव जी ने श्री गुरु अंगद देव जी के सिर पर गीले खरफतवार का बोझ रखवा दिया जिससे घर आते-आते उनके रेशमी वस्त्र बोझ से टपक रहे कीचड़ से खराब हो गए। श्री गुरु नानक देव जी ने कहा कि ये तो केसर के छींटे हैं। गुरु साहिब ने जो बताया वह सच सिद्ध हुआ और श्री गुरु अंगद देव जी को उनके इस समर्पण-भाव ने ही गुरगद्दी के अधिकारी बनाया।

परमात्मा हर किसी को जीवन की कुंजी सौंपने को तैयार रहता है, किंतु उसे पाने योग्य बनना हर किसी के वश में नहीं है। श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक साहिब की सेवा करते हुए जो मार्ग अपनाया था वह देखने में सरल लगते हुए भी अत्यंत कठिन था। अपने आप को परम शक्ति के सामने समर्पित कर देने से बड़ा कोई जप, तप नहीं है। श्री गुरु अंगद देव जी ने पहले सारी स्थापित मान्यताओं को नकारा। वे धनवान परिवार से थे और उनका खासा व्यापार था। उसे छोड़ना आसान नहीं था। उनका मन श्री गुरु नानक साहिब के दर्शन के बाद करतारपुर में ही रम गया और एकबारगी व्यापार का मोह छूट गया। उनका परिवार धार्मिक रूप से देवी-पूजा से जुड़ा हुआ था। श्री गुरु अंगद देव जी अपने क्षेत्र के देवी-भक्तों के मुखिया थे और हर साल श्रद्धालुओं के समूह को लेकर देवी-दर्शन के लिए जाया करते थे। उन्होंने बाल्यावस्था से धारण की हुई इस गहरी आस्था को तोड़ दिया और गुरु के उपदेशों को ग्रहण करने की राह पर बिना किसी संकोच के चल पड़े। बड़े ही सहज भाव से ऐसा करते हुए उन्होंने अपने समर्पण की राह खोली :

जिनी चलणु जाणिआ से किउ करहि विथार ॥
चलण सार न जाणनी काज सवारणहार ॥
(पन्ना ७८७)

श्री गुरु अंगद देव जी ने कहा कि जिन्हें परमात्मा के मार्ग पर चलना आ गया वे इस तरह शांत रह कर नम्र-भाव से बिना किसी को जताये अपने कर्म किए जाते हैं कि किसी को आभास ही नहीं होता। श्री गुरु अंगद देव जी ने सारे निम्न और तुच्छ माने जाने वाले काम भी श्री गुरु नानक देव जी के हुक्म पर बड़ी ही प्रसन्नता और मन से किए :

गुरमुखि खेती हरि अंतरि बीजीऐ
हरि लीजै सरीरि जमाए राम ॥
आपणे घर अंदरि रसु भुंचु तू
लाहा लै परथाए राम ॥
लाहा परथाए हरि मंनि वसाए
धनु खेती वापारा ॥
हरि नामु धिआए मंनि वसाए बूझै गुर बीचारा ॥
(पन्ना ५६८)

गुरमुख अपने अंतर में परमात्मा की प्रीति की फसल बोता और काटता है तथा मन उस प्रीति से मिलने वाले सुख को भोगता है। यह बीज मन में ही बोया जा सकता है। बाहरी कर्मकांडों से इसका कोई सम्बंध नहीं है। गुरु के ज्ञान को मन में ही विचार कर धारण किया जाता है। गुरु के ज्ञान से ही पता चलता है कि सांसारिक मोह-माया के बंधनों में पड़कर किए गए कर्म व्यर्थ हैं, क्योंकि कब काल का बुलावा आ जाए, पता नहीं :

राति कारणि धनु संचीऐ भलके चलणु होइ ॥
नानक नालि न चलई फिरि पछुतावा होइ ॥
(पन्ना ७८७)

जब तक इस बात का ज्ञान नहीं होता कि

Final

कर्मकांड, सांसारिक दिखावा आदि काम नहीं आने वाले तब तक अंतर शुद्ध नहीं हो सकता। अंतर यदि शुद्ध नहीं है तो कुछ भी कर लें, अंत में पछताना ही पड़ेगा। श्री गुरु अंगद देव जी के मन में व्याप्त सारे भ्रम, सारी शंकायें मिट गई थीं, तभी निर्मल मन से वे श्री गुरु नानक साहिब की सेवा को समर्पित हो सके थे। समर्पण का सबसे बड़ा आधार होता है कि अपनी किसी भी प्रकार की चिंता न हो और ऐसे सारे कर्मों की संभावना मिट जाए, जिनसे पछताना पड़े। इसके अतिरिक्त समर्पण वही है जो किसी बाध्यता के बिना किया गया हो। बाध्यता में किया गया समर्पण मन में आनंद को नहीं पनपने देता :

बधा चटी जो भरे ना गुणु ना उपकारु ॥
सेती खुसी सवारीऐ नानक कारजु सारु ॥
(पन्ना ७८७)

किसी बंधन, किसी विवशता के कारण जब परमात्मा की शरण में जाते हैं तो कोई गुण नहीं उत्पन्न होते अर्थात् आत्मिक विकास की अवस्था नहीं बनती और इस कारण कोई हित नहीं सिद्ध होता, जो विकारों से मुक्त करके जीवन को सहज और शुद्ध बनाने वाला हो। जीवन-मुक्ति का मार्ग तो बिना किसी बाध्यता के स्वेच्छा और आनंद से भर कर चलने वाला मार्ग है। श्री गुरु नानक साहिब ने इसे प्रेम का मार्ग कहा है। इसी प्रेम-भावना में भर कर श्री गुरु अंगद देव जी ने करतारपुर में अपनी जीवन-मुक्ति का मार्ग खोला था। इस मार्ग पर चलना आसान नहीं था। श्री गुरु अंगद देव जी के मार्ग में भी कदम-कदम पर कठिनाइयां और परीक्षायें थीं, जिन्हें उन्होंने अपने मन के विश्वास से ही पार किया। यदि उन्होंने मन में परमात्मा के नाम की खेती न की होती तो यह असंभव था।

श्री गुरु अंगद देव जी ने समर्पण का सबसे सुनहरा सूत्र जो अपने जीवन में धारण करके दिखाया उसे अपनी बाणी में भी व्यक्त किया :

किस ही कोई कोइ मंञु निमाणी इकु तू ॥
किउ न मरीजै रोइ जा लगु चिति न आवही ॥
(पन्ना ७९१)

यह गुरमति का प्रमुख सूत्र है जो गुरसिक्ख की आत्मिक उन्नति को तय करता है। जिसने जितनी मजबूती से इस सूत्र को पकड़ लिया उतना ही उसका कल्याण होता है। इस विचार के सहारे ही गुरसिक्ख आगे बढ़ता जाता है और परमात्मा की कृपा उस पर बरसती जाती है। परमात्मा जिस पल मन से विस्मृत हो जाता है, तन निर्जीव हो जाता है। परमात्मा ही जीवन है। इस सूत्र को समझने के लिए मन की निर्मलता चाहिए। जब मोह-माया के प्रभाव और विकारों की कैद से मुक्त मन पूरी तरह से स्वच्छ हो जाता है तभी उसमें यह विचार समा पाता है कि परमात्मा ही उसका आसरा, उसका उद्धारकर्त्ता है। किसी को अपने कल्याण का कोई मार्ग सूझता है, किसी को कोई, किंतु परमात्मा का मार्ग उसी को सूझता है, जिसका मन निर्मल हो चुका है। निर्मल मन परमात्मा पर ही विश्वास करना जानता है। परमात्मा के अतिरिक्त और कोई शक्ति उसे नज़र नहीं आती जो उसका उद्धार कर सके। मन नर्मल हो जाये और उसमें परमात्मा का नाम समा जाये, इससे अधिक अच्छा कार्य और कोई नहीं है :

सा मति निरमल कहीअत धीर ॥
राम रसाइणु पीवत बीर ॥ *(पन्ना १९८)*

मन और मति की निर्मलता बड़े ही संयम और धैर्य से आती है जो सबसे बड़ी शक्ति है। इसके लिए कितने ही यत्न-- जप, तप, यज्ञ, कर्मकांड, हठ, योग, त्याग आदि किए जा रहे थे। श्री गुरु नानक साहिब ने इस सबको छोड़ कर मन में प्रभु-नाम धारण करने को कहा।

Final

यह शेष सारे यत्नों से कठिन तो प्रतीत होता है मगर जिसने इसे धारण कर लिया उससे बड़ा वीर कोई नहीं है। श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी की सेवा करते हुए यह बात सिद्ध की। श्री गुरु अंगद देव जी की जीवन-साखियों के अनुसार उन्होंने श्री गुरु नानक देव जी के हुक्म से घोर अंधेरे में उनके वस्त्र धोये, गंदे पानी में उतर कर छन्ना (बर्तन) निकाला, दीवार बार-बार गिराकर बनाई। गुरु के हुक्म को सहर्ष मानने की यह सामर्थ्य और शक्ति उनके अंदर लहलहाती हुई परमात्मा-प्रेम की फसल से पैदा हुई थी। जैसे-जैसे प्रीति बढ़ती गई, शक्ति बढ़ती गई। जब ये शक्ति-भरपूर हो गये, श्री गुरु नानक साहिब ने इन्हें गुरुआई और पंथ की बागडोर सौंप दी। इन परीक्षाओं के दौरान इन्हें कितनी ही बातें, कितने ही ताने सुनने पड़े और उपहास सहना पड़ा, मगर वे अपने मार्ग पर अडिग चलते रहे। वे तो गुरु की कृपा में मगन थे। उन्हें तो इस बात का आनंद था कि वे गुरु के हुक्म का पालन कर रहे हैं और गुरु ने उन्हें परमात्मा से जोड़ कर उनके सारे भ्रम दूर कर दिए हैं :

सभे गला आपि थाटि बहालीओनु ॥
आपे रचनु रचाइ आपे ही घालिओनु ॥
आपे जंत उपाइ आपि प्रतिपालिओनु ॥
दास रखे कंठि लाइ नदरि निहालिओनु ॥
नानक भगता सदा अनंदु भाउ दूजा जालिओनु ॥
(पन्ना ६५३)

तब यह समझ आ जाता है कि परमात्मा ने ही सारे जीव-जंतु बनाए हैं और वही उनका लालन-पालन कर रहा है। उसी की मर्जी से सबका जीवन चल रहा है। सारे प्रबंध वही कर रहा है। किसी और में इतनी शक्ति ही नहीं है। विशेष बात यह है कि वह अपने भक्तों को बड़े प्रेम से अपने निकट रख कर उन पर कृपा करता है और कभी भी उन्हें कोई कष्ट नहीं होने देता। उसकी कृपा से उसके भक्त सदा आनंद में रहते हैं और उसी को समर्पित रहते हैं। इस प्रकार परमात्मा के प्रति जो समर्पण है उसमें परमात्मा स्वयं सहायक होता है। समर्पण का यह भाव इतना दृढ़ था कि श्री गुरु अंगद देव जी ने सदा परमात्मा के भय तथा हुक्म में रहना और परमात्मा की सर्वोच्चता को प्रश्नों से परे स्थापित करना सिखाया। उन्होंने कहा कि यह नहीं हो सकता कि *"सलामु जबाबु दोवै करे"* अर्थात् परमात्मा की भक्ति भी करें, उसकी शरण भी लें और अपने मन की भी करें तथा उसके कार्यों में संदेह भी करें।

श्री गुरु अंगद देव जी ने बताया कि परमात्मा के नियमों और कार्यों में दखल देना अच्छी बात नहीं है। सृष्टि में जो कुछ हो रहा है परमात्मा की आज्ञा से ही हो रहा है, जिसे मानना चाहिए। यह समर्पण की पराकाष्ठा थी जिसकी बख़्शिश परमात्मा ने श्री गुरु अंगद देव जी पर की और उनके माध्यम से आगे संसार को मिली। यही जीवन की कुंजी है। इस कुंजी से श्री गुरु अंगद देव जी ने मानवीय हितों के बड़े उपकार किए :

जा की द्रिसटि अंम्रित धार कालुख खनि उतार
तिमर अग्यान जाहि दरस दुआर ॥
ओइ जु सेवहि सबदु सारु गाखड़ी बिखम कार ते
नर भव उतारि कीए निरभार ॥
(पन्ना १३९१)

भट्ट साहिबान की बाणी के अनुसार श्री गुरु अंगद देव जी ने ऐसी अवस्था हासिल कर ली कि उनके दर्शन-मात्र से ही सारा अज्ञान दूर हो जाता है और मन निर्मल हो जाता है। जिन्होंने गुरु साहिब की आज्ञा मान कर जीवन को उनकी शिक्षाओं के अनुरूप ढाला वे सारे पापों से मुक्त हो गए और आवागमन के विषम चक्र से उबर गए।

Final

श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी का विषय-वस्तु

-डॉ. परमजीत कौर*

श्री गुरु अंगद देव जी का प्रकाश गांव सराय नागा (मत्ते दी सरां), ज़िला श्री मुकतसर साहिब (पंजाब) में ५ वैसाख, संवत् १५६१ तद्नुसार ३१ मार्च, १५०४ ई. को हुआ। आप जी के पिता का नाम बाबा फेरू मल्ल जी तथा माता जी का नाम माता दइआ कौर (सभराई) जी था। आपने कुल ६३ सलोकों का उच्चारण किया, जो श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अमरदास जी तथा श्री गुरु रामदास जी द्वारा उच्चारण की गई वारों की पउड़ियों के साथ दर्ज किए गए हैं। जीवनोपयोगी उपदेशों द्वारा भटके हुए मन को शांति प्रदान करने वाली आपकी बाणी में शरीर की नश्वरता, जीवन के उद्देश्य, गुरु की शरण, गुरु-शब्द की विचार, नाम-सिमरन, हुकमि रजाई चलणा, सेवा प्रभु-मिलाप आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

शरीर की नश्वरता : मानव-शरीर नश्वर है। एक न एक दिन सबने यहां से जाना है। कुछ भी साथ नहीं जाता। सब कुछ यहीं रह जाता है। श्री गुरु अंगद देव जी समझा रहे हैं कि जिनको यह बात समझ में आ जाती है वे व्यर्थ के सांसारिक प्रपंचों में नहीं पड़ते। सांसारिक धंधों में ही लिप्त रहने वाले यहां से जाने की बात भूल जाते हैं तथा अंतिम समय में पश्चाताप करते हैं :

जिनी चलणु जाणिआ से किउ करहि विथार ॥
चलण सार न जाणनी काज सवारणहार ॥
राति कारणि धनु संचीऐ भलके चलणु होइ ॥
नानक नालि न चलई फिरि पछुतावा होइ ॥
(पन्ना ७८७)

दुनिया द्वारा मिलने वाले आदर-सम्मान आदि की प्राप्ति की इच्छा भी परमात्मा से दूर ले जाती है, जिसका मृत्यु के उपरांत कुछ भी लाभ प्राप्त नहीं होता :

नानक दुनीआ कीआं वडिआईआं अगी सेती जालि ॥
एनी जलईं नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥
(पन्ना १२९०)

जीवन का उद्देश्य : दुर्लभ देह को प्राप्त करके नाम-सिमरन करते हुए जन्म-मरण से मुक्ति तथा परमात्मा में लीनता ही इस जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। प्रभु के नाम में चित्त न लगा तो जीवन व्यर्थ हो जाता है। श्री गुरु अंगद देव जी सचेत कर रहे हैं :

निहफलं तसि जनमसि जावतु ब्रहम न बिंदते ॥
सागरं संसारसि गुर परसादी तरहि के ॥
(पन्ना १४८)

वही जीव मनुष्य कहलाने का अधिकारी है जो प्रभु-प्रेम में लीन रहता है। गुरु साहिब के मतानुसार जो सिर अपने स्वामी के आगे नहीं झुकता, श्रद्धा सहित नमस्कार नहीं करता, उस सिर को काट देना चाहिए :

जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु दीजै डारि ॥
(पन्ना ८९)

प्रभु की बंदगी करने वाले का जीवन ही

*६२०, गली नं. १, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर-१३५००१ (हरियाणा); फोन : ९८१२३-५८१८६

Final

सफल होता है। बंदगी करने वाला जीव परमात्मा की कृपा का पात्र होता है :

नदरि तिन्हा कउ नानका नामु जिन्हा नीसाणु ॥
(पन्ना १२३९)

नाम-सिमरन : मनुष्य-मात्र चाहे किसी भी जाति-वर्ण से संबंधित हो, उसका एक ही धर्म है-- नाम-सिमरन :

जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥
खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥
सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥
(पन्ना ४६९)

बंदगीहीन, नाम-सिमरन न करने वाला मनुष्य अंधे मनुष्य की भांति पग-पग पर भटकता रहता है। वास्तव में अंधा वह है, जिसने परमात्मा को विस्मृत कर दिया है :

अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि ॥
(पन्ना ९५४)

प्रभु को विस्मृत कर देने से चिंता, तनाव आदि ज़िंदगी का हिस्सा बन जाते हैं। जरूरी है कि अमृत वेले उठकर नाम-सिमरन किया जाए, सतसंग में जाकर परमात्मा का गुण-कीर्तन किया जाए, सुना जाए तथा सारा दिन धर्म की किरत करते हुए, परमात्मा को अंग-संग जानकर ध्यान सदा अकाल पुरख एवं भद्र पुरुषों की संगत में रहे :

चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ ॥
तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ ॥
(पन्ना १४६)

गुण-कीर्तन सदा परमात्मा का ही करना चाहिए। अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए लोगों की प्रशंसा करने में समय नहीं गंवाना चाहिए :

कीता किआ सालाहीऐ करे सोइ सालाहि ॥
नानक एकी बाहरा दूजा दाता नाहि ॥
(पन्ना १२३९)

परमात्मा का सिमरन मन लगाकर करना चाहिए। श्री गुरु अंगद देव जी समझाते हैं कि यदि कोई कार्य जबरदस्ती या मज़बूरी में किया जाए तो उसका कोई लाभ नहीं होता। इसी तरह मन के हठ से जबरदस्ती भक्ति करने से कोई आत्मिक लाभ प्राप्त नहीं होता :

बधा चटी जो भरे ना गुणु न उपकारु ॥
सेती खुसी सवारीऐ नानक कारजु सारु ॥
(पन्ना ७८७)

मन को प्रभु-सिमरन में लगाने के लिए आवश्यक है कि उसके पूर्व स्वभाव को बदला जाए। किसी एक बर्तन में कोई दूसरी वस्तु तभी रखी जा सकती है यदि उसमें पड़ी हुई पहली वस्तु निकाल दी जाए। मन से माया के मोह को निकालकर ही मन को नाम-सिमरन में लगाया जा सकता है :

वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥
साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥
(पन्ना ४७४)

अपने-अपने कर्मों के अनुसार जीव परमात्मा के निकट या उससे दूर होता है। परमात्मा के नाम में मन लगाने वाले नाम जपकर अपना जीवन सफल कर लेते हैं :

चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥
(पन्ना १४६)

जो जीव अपनी सांसों की सारी पूंजी नाम के व्यापार में लगा देते हैं उन पर परमात्मा की कृपा होती है :

नदरि तिना कउ नानका जि साबतु लाए रासि ॥
(पन्ना १२३८)

जो जीव उठते-बैठते, सोते-जागते सदा परमात्मा

Final

को याद रखते हैं वे सदा प्रसन्न रहते हैं :

नानक तिना बसंतु है जिन घरि वसिआ कंतु ॥
(पन्ना ७९१)

गुरु की शरण तथा गुरु-शबद विचार : गुरमति-मार्ग पर चलने के लिए गुरु की शरण लेनी आवश्यक है। गुरु के बिना अज्ञानता का अंधकार दूर नहीं होता :

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
एते चानण होदिआ गुर बिनु घोर अंधार ॥
(पन्ना ४६३)

मनुष्य का मन मानो कोठा है तथा शरीर इस कोठे की छत है। माया की पाह का इस मन रूपी कोठे को ताला लगा हुआ है। इस ताले को खोलने के लिए 'गुरु' चाबी है अर्थात् मन से माया का प्रभाव गुरु ही दूर कर सकता है :

नानक गुर बिनु मन का ताकु ना उघड़ै
अवर न कुंजी हथि ॥ (पन्ना १२३७)

गुरु की शरण में आए बिना मोह के बंधनों से मुक्ति नहीं मिलती, आत्मिक जीवन की समझ नहीं आती। मानव-स्वभाव है कि वह कभी तृप्त नहीं होता। मुंह बोल-बोलकर तृप्त नहीं होता, कान बातें सुन-सुन कर भी अतृप्त रहते हैं। विभिन्न रसों के अधीन हुई इंद्रियां अपने विषयों से स्वयं को वर्जित नहीं करती । समझाने पर भी भूख शांत नहीं होती। तृष्णा के अधीन हुआ मनुष्य तभी तृप्त हो सकता है जब गुरमति के अनुसार चलता हुआ प्रभु का गुण-कीर्तन करता रहे तथा गुणों के स्वामी प्रभु में लीन रहे :

आखणु आखि न रजिआ सुनणि न रजे कंन ॥
अखी देखि न रजीआ गुण गाहक इक वंन ॥
भुखिआ भुख न उतरै गली भुख न जाइ ॥
नानक भुखा ता रजै जा गुण कहि गुणी समाइ ॥
(पन्ना १४७)

परमात्मा के नाम को हृदय में बसाने के लिए गुरु-शबद पर विचार करना आवश्यक है ताकि गुरबाणी के अनुसार जीवन बनाया जा सके। गुरबाणी के अनुसार जीवन-राह पर चलकर ही अहंकार दूर कर स्वभाव को विनम्र बनाया जा सकता है। गुरु साहिब समझाते हैं कि अहंकार दीर्घ रोग है, मगर यह लाइलाज नहीं है। यदि प्रभु की कृपा हो जाए तो जीव गुरु-शबद के अनुसार जीवन-यापन करता हुआ अहंकार को दूर कर सकता है :

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इस माहि ॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥
(पन्ना ४६६)

प्रभु-मोह से शून्य मन के हठ से परमात्मा का सामीप्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। वही मनुष्य परमात्मा की कृपा का पात्र बनता है जो शुभ भावना रखता हुआ गुरु-शबद की विचार कर उसमें निर्दिष्ट नियमों के अनुसार जीवन बनाता है :

मनहठि तरफ न जिपई जे बहुता घाले ॥
तरफ जिणै सत भाउ दे जन नानक सबदु वीचारे ॥ (पन्ना ७८७)

हुकमि रजाई चलणा : 'हुकमि रजाई चलणा' ही जीवन का सही मार्ग है। जीव के जीवन की डोर परमात्मा के हाथ में है। राजा तथा रंक सबको परमात्मा के हुक्म में चलना पड़ता है। जीवों के वश में कुछ नहीं है। गुरु जी के मत में वही कार्य शुभ मानना चाहिए जो परमात्मा को अच्छा लगता है :

चीरी जिस की चलणा मीर मलक सलार ॥
जो तिसु भावै नानका साई भली कार ॥
जिन्हा चीरी चलणा हथि तिन्हा किछु नाहि ॥
साहिब का फुरमाणु होइ उठी करलै पाहि ॥
(पन्ना १२३९)

Final

यदि पुत्र अपने पिता के स्वभाव तथा उसकी रजा को समझकर उसके अनुसार चलने का प्रयत्न करता है तो घर में सुख-शांति रहती है। परमात्मा सदा प्रेम तथा कृपा करने वाला हमारा पिता है। शिकवा करने के स्थान पर उसकी रजा को समझने में ही कल्याण है। गुरु साहिब का फरमान है :

नानक हुकमु न बुझई अंधा कहीऐ सोइ ॥
(पन्ना ९५४)

जीवन में आये सुख-दुख को प्रभु की रज़ा समझ कर स्थिराचित्त रहना मानसिक शांति प्रदान करता है। दूसरों के कार्यों की जांच-पड़ताल करने की बजाय अपनी परख करनी चाहिए :

नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु ॥
(पन्ना १४८)

सेवा : सेवा नाम-सिमरन में सदैव सहायक है। सेवा करने से मन निर्मल होता है, अहंकार दूर हो जाता है, स्वभाव में विनम्रता आ जाती है तथा जीवन परोपकारी हो जाता है। श्री गुरु अंगद देव जी के अनुसार जिस सेवा को करने से सेवक का दिल प्रभु-प्रेम से पूर्ण नहीं होता, वह सेवा वास्तविक सेवा नहीं है। सेवक वही है जो अपने स्वामी से एक रूप हो जाता है :

एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥
नानक सेवक काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥
(पन्ना ४७५)

मन प्रभु को अर्पण करके आपा-भाव त्यागकर की गई सेवा ही गुरमति में मान्य है :

चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥
गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥
आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥
नानक जिस नो लगा तिसु मिलै
लगा सो परवानु ॥ *(पन्ना ४७४)*

प्रभु-मिलाप : परमात्मा को हृदय में बसाने से ही प्रभु-मिलाप हो सकता है, किसी बाह्य धार्मिक लिबास, भेस, कर्मकांड आदि से नहीं :

मिलिऐ मिलिआ ना मिलै मिलै मिलिआ जे होइ ॥
अंतर आतमै जो मिलै मिलिआ कहीऐ सोइ ॥
(पन्ना ७९१)

चाहे दुख हो या सुख सदा प्रभु का ही आश्रय लेना चाहिए :

जां सुखु ता सहु रविओ दुखि भी संम्हालिओइ ॥
नानकु कहै सिआणीए इउ कंत मिलावा होइ ॥
(पन्ना ७९२)

प्रभु-प्राप्ति की डगर पर चलने के लिए पर-धन, पर-तन का लोभ, पर-निंदा, हउमै, मेर-तेर की भावना को त्याग कर जीवित रहते हुए ('मैं' के अभाव से) मर जाना जरूरी है। संसार में रहते हुए, जीवित होते हुए कैसे मरा जा सकता है, इसको विस्तार से समझाते हुए श्री गुरु अंगद देव जी कथन करते हैं कि यदि आंखों के बिना देखें अर्थात् यदि नेत्रों को पर-रूप देखने से रोक लिया जाए, कानों के बिना सुनें अर्थात् यदि कानों से निंदा सुनने की आदत को हटा लिया जाए, यदि पैरों के बिना चला जाए अर्थात् पैरों को गलत रास्ते पर जाने से रोक लिया जाए, यदि हाथों के बिना काम करें अर्थात् हाथों से कोई दुष्कर्म, किसी के नुकसान का काम न किया जाए तो मनुष्य जीवित रहता हुआ मर सकता है तथा परमात्मा का हुक्म पहचानकर परमात्मा को मिल सकता है :

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा ॥
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा ॥
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ॥
(पन्ना १३९)

Final

मनुष्य मंद कर्मों से अपने को रोक सके, इसके लिए हृदय में परमात्मा का भय होना आवश्यक है। गुरु जी का कथन है कि यदि जीव प्रभु के भय में चलने को अपने पैर बनाए, प्यार के हाथ बनाये तथा प्रभु की याद में रहने को आंखें बनाए तो प्रभु को पा सकता है :

दिसै सुणीऐ जाणीऐ साउ न पाइआ जाइ ॥
रुहला टुंडा अंधुला किउ गलि लगै धाइ ॥
भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ ॥
नानकु कहै सिआणीए इव कंत मिलावा होइ ॥
(पन्ना १३९)

गुरु साहिब संक्षेप में समझाते हैं कि जिस मनुष्य के हृदय में नाम का निवास हो जाता है वह सांसारिक विषयों से विमुख हो जाता है। परिवार के साथ भी उसका वह मोह नहीं रह जाता जो त्रिगुणात्मक माया में फंसाता है। ऐसा मनुष्य प्रभु को सदैव अपने विचार-मंडल में टिकाये रखता है। किंतु ऐसे मनुष्य बहुत कम मिलते हैं जो हर दम अथाह, अगोचर, अगम्य, अनंत प्रभु का दीदार करने में लीन रहते हैं :

सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइआ ॥
अठी वेपरवाह रहनि इकतै रंगि ॥
दरसनि रूपि अथाह विरले पाईअहि ॥
(पन्ना १४६)

Final

कविता

वेदना-भंडार

*-श्री प्रशांत अग्रवाल**

दुखी हृदय की आह सुन लो!
प्यासे मन की चाह सुन लो!
दर्द का सागर हृदय में,
कोई इसकी थाह ले लो!
दिख रहा सब शांत है।
किंतु मन अति क्लांत है।
क्या करूँ कर्त्तव्य हेतु,
बुद्धि भी अब भ्रांत है।

दुख-भरा संसार है।
हर आदमी लाचार है।
क्यों बनाया हे प्रभु!
यह वेदना-भंडार है?
हो सुगम कर्त्तव्य-पथ।
नि:शंक दौड़े कर्म-रथ।
सन्मति पायें सभी जन,
पूर्ण हों सच्चे मनोरथ।

**४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ प्र)। मो : ०९४११६०७६७२*

श्री गुरु अंगद देव जी की शख़्सियत के गुण

*-श्रीमती राज शर्मा**

ज़िला श्री मुक्तसर साहिब में गांव सराए नागा (मत्ते दी सरां) वर्तमान में व्यापारी भाई फेरूमल जी और माता दइआ कौर जी के घर भाई लहिणा जी का प्रकाश हुआ। आप हर वर्ष देवी-दर्शन को जाते, लेकिन आत्मा अतृप्त ही रही।

एक बार आपको श्री गुरु नानक देव जी की बाणी भाई जोध जी से सुनने का अवसर मिला। फिर श्री गुरु नानक देव जी के दर्शन करतारपुर में करने के पश्चात आप अत्यंत प्रभावित हुए और वहीं बस गये। जिस दिन से आप श्री गुरु नानक देव जी को मिले, उसी दिन से आप उनके सिक्ख हो गये। श्री गुरु नानक देव जी जब खेतों में जाते तो भाई लहिणा जी उनके साथ काम कर रहे होते। लंगर के समय आप लंगर वितरित कर रहे होते। गुरबाणी-कीर्तन के समय आप पूरी लगन से भक्ति-रस में डूबे हुए गा रहे होते।

श्री गुरु नानक देव जी के प्रति भाई लहिणा जी की असीम श्रद्धा की अनेक घटनाएं और साखियां प्रसिद्ध हैं। रात में गुरु जी के वस्त्र धोकर लाना सर्वविदित है। आपने श्री गुरु नानक देव जी की आज्ञा पाकर कीचड़ से भरा घास का गट्ठर अपने सिर पर उठा लिया, अपने कपड़ों की रत्ती भर भी चिंता नहीं की। आपने तेज़ बारिश में गुरु जी के घर की गिरी हुई दीवार को बार-बार गिरने पर भी बना दिया। सिक्ख परंपराओं के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी ने गुरुआई सोंपने से पहले भाई लहिणा जी की कई बार परीक्षा ली। अच्छी तरह परखने के पश्चात सिक्ख मर्यादा के अनुसार उनको दूसरे गुरु के रूप में गुरुआई पर बिठाया। 'अंगद' नाम दिया, जिससे वे श्री गुरु अंगद देव जी के नाम से विख्यात हुए।

श्री गुरु अंगद देव जी ने नम्रता व ईश्वर-सत्ता में दृढ़ विश्वास को अर्जित किया। आपने लंगर-प्रणाली को बनाये रखते हुए इसे और भी सुदृढ़ किया। यह लंगर-प्रणाली समस्त भेदभावों को दूर करते हुए मानवता में एक आदर्श थी। आपने 'संगत' और 'पंगत' संस्थाओं का विस्तार किया। श्री गुरु अंगद देव जी के अनुसार प्रभु का सामीप्य अथवा दूरी हमारे कर्मों पर ही निर्भर है।

आपके अनुसार गुण स्वयं अपना पुरस्कार और दोष-दंड हैं। जिनमें दोष होते हैं वे लोग असफल रहते हैं और कष्ट पाते हैं।

मुसलिम बादशाह हुमायूं जैसे इंसान को भी गुरु जी ने उस समय सही दिशा दिखाई जब वह गुरु जी के दर्शन करने आया। गुरु जी की तरफ से इच्छानुसार तवज्जो न मिलने पर हुमायूं का हाथ तलवार की मूठ पर चला गया तो गुरु जी ने कहा कि हर काम सही वक्त पर करना चाहिए अर्थात् हुमायूं को तलवार का प्रयोग वहां करना चाहिए था जहां से वो हार खाकर भाग आया था।

श्री गुरु अंगद देव जी को बच्चे बहुत प्रिय

**लायब्रेरियन, आर आर बावा डी ए वी कालेज फॉर गर्ल्स, बटाला (गुरदासपुर)-१४३५०५*

Final

थे। वे उन्हें इकट्ठा करके उनके लिए खेलों का आयोजन करते थे। उन्हें शारीरिक व्यायाम करवाते और ईनाम भी देते थे। खेलों के साथ-साथ गुरु जी उनकी शिक्षा पर भी उतना ही बल देते थे। आप चाहते थे कि सब लोग अपनी मातृ-भाषा सीखें, इसलिए आपने गुरमुखी लिपि को प्रचलित करने में अथाह योगदान दिया।

एक बार खडूर साहिब में रहते हुए वर्षा न होने के कारण लोगों की फसलें सूखने लगीं। तपा नामक व्यक्ति द्वारा गुरु जी को दोष दिया गया और उन्हें गांव से निकालने की सलाह दी गई। गुरु जी ने परमात्मा की इच्छानुसार ही सब कुछ होने की शिक्षा दी, लेकिन लोग उनकी बात को न समझते हुए तपा के कहने पर उन्हें गांव छोड़ने के लिए कहने लगे। गुरु जी खडूर साहिब छोड़कर चले गये, लेकिन वर्षा फिर भी न हुई। लोग पश्चाताप करते हुए गुरु जी को गांव ले आए, फिर वर्षा हुई।

श्री गुरु अंगद देव जी को अपने सिक्ख बाबा अमरदास जी अत्यंत प्रिय थे। उनकी सेवा-भक्ति देखते हुए गुरु जी ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी बनाया।

राजनीतिक रूप से श्री गुरु नानक देव जी की तरह श्री गुरु अंगद देव जी का समय भी अव्यवस्थित था। लोग गलत ढंग से भ्रष्टाचार वाला जीवन व्यतीत कर रहे थे। गुरु जी ने गुरमुखी लिपि का सरलीकरण करके इसके प्रयोग के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया, भाषा को परिपक्व किया। आपने कई ऐसे प्रयास किए जिनसे गुरु-घर का कार्य-क्षेत्र और विस्तृत हुआ। आपने गुरबाणी के गुटके तैयार करवा कर लोगों में बांटे। लोगों को गृहस्थ की महत्ता बताते हुए आप अपनी नेक सीरत सुपत्नी माता खीवी जी के सहयोग से लंगर-सेवा में भी जुटे रहते।

Final

उपहार ऐसा जो जीवन भर याद रहे

यह बात हर एक आम व खास व्यक्ति के मन को कचोटती रहती है कि वो अपने मित्रों, सम्बंधियों को यदि उपहार दे तो क्या दे? किसी के जन्म-दिन आदि या किसी विशेष दिवस पर किसी को कुछ भेंट किया जाए तो ऐसा उपहार हो जिसे स्वीकार करने वाला जिंदगी भर याद रखे। इसके लिए अब ज्यादा सोचने और चिंता की जरूरत नहीं है। जीवन भर का उपहार है 'गुरमति ज्ञान'। उपहार भी ऐसा कि जब हर माह मित्र आदि के घर पर जाकर डाकिया 'गुरमति ज्ञान' की प्रति थमाएगा तो आपका मित्र हर माह आपका शुक्रिया करता नहीं थकेगा। आप अपने मित्र या किसी सम्बंधी को केवल १००/- रुपये में उपहारस्वरूप 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बना दीजिए और हासिल कीजिए अपने मित्र की जीवन भर की खुशियां। यह सौदा बेहद सस्ता एवं लाभकारी रहेगा। आज ही मनीआर्डर या बैंकड्राफ्ट के जरिए चंदा भेजकर अपने मित्र या सम्बंधी को 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बनाकर उसे इस बहुमूल्य 'उपहार' से निवाजें।

-संपादक।

सामाजिक कुरीतियों में सुधार के लिए श्री गुरु अमरदास जी के उपदेश

*-स. गुरदीप सिंघ**

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाए सिक्ख धर्म की विचारधारा को आगे चलाते हुए श्री गुरु अमरदास जी ने संगत और पंगत की भावना को पक्का किया। ऊंच-नीच, जात-पात, गरीब-अमीर जब सब एक पंगत में बैठ कर खाएं तो अपवित्र का एहसास (जो कि नफरत पैदा करता है) खत्म हो जाता है। शहंशाह अकबर जब श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन के लिए श्री गोइंदवाल साहिब आया तो गुरु साहिबान द्वारा स्थापित मर्यादा के अनुसार उसने भी पंगत में बैठकर लंगर छका। श्री गुरु अमरदास जी ने वर्ण-भेद मिटाने के लिए बाउली तैयार करवाई। बाउली का जल सबके लिए सांझा था।

५०० वर्ष पहले समाज में स्त्री का दर्जा बहुत निम्न स्तर का माना जाता था। श्री गुरु नानक देव जी ने स्त्री की महानता का प्रकटावा करते हुए उसके सम्मान हेतु आवाज़ उठाई। श्री गुरु अमरदास जी ने इसे परिपक्व किया। उस समय स्त्री को घर की चारदीवारी में रहने की आज्ञा थी। बाहर जाने के लिए उसे अपने शरीर को सिर से पैरों तक कपड़े के साथ ढकना होता था। बाहर जाने के लिए या किसी भी काम में शामिल होने के लिए स्त्री घूंघट निकाल कर जाती थी। श्री गुरु अमरदास जी ने आदेश दिया कि गुरु-दरबार में या संगत में कोई भी स्त्री घूंघट निकाल कर न आए। जब हरीपुर का राजा हरीचंद आप जी के दर्शन के लिए आया तो उसकी छोटी रानी घूंघट निकाल कर आई। श्री गुरु अमरदास जी ने रानी को देखते ही कहा कि घूंघट निकालना ठीक नहीं है। इस तरह स्त्री को गुलामी की इस रीति से आज़ाद किया।

उस समय लड़की के जन्म को परिवार पर बोझ समझा जाता था। जो भी स्त्री लड़की को जन्म देती उसे अभाग्यशाली समझा जाता था और परिवार वालों के प्रकोप का शिकार होना पड़ता था। श्री गुरु अमरदास जी ने इस जुल्म का विरोध किया। गुरु जी ने कन्या-हत्या, बेटी का पैसा खाने वाले मनुष्य के साथ रिश्ता रखने वाले को भी फिटकारा है :

ब्रहमण कैली घातु कंञका अणचारी का धानु ॥
फिटक फिटका कोडु बदीआ सदा सदा अभिमानु ॥
(पन्ना १४१३)

उस समय भारत में पुरुष की चिता पर स्त्री के जल मरने की भयानक रस्म प्रचलित थी, जिसको सती-प्रथा कहा जाता था। वास्तव में स्त्रियां मन की इच्छा से पति की चिता पर जलकर नहीं मरती थीं, बल्कि उनको ज़बरदस्ती सती किया जाता था। जिस औरत को सती करना होता था, उस स्त्री को सुंदर वस्त्र पहनाकर उसकी गोद में पति का मुर्दा शरीर रख कर बिठा दिया जाता था। आस पास लकड़ियां चिन दी जाती थीं। चिता को आग लगाते समय ज़ोर-ज़ोर से ढोल आदि बजाए

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; फोन : ९८८८१२६६९०*

Final

जाते थे, ताकि उस शोर में सती हो रही स्त्री की चीखें बाहर वाले लोग न सुनें और उस स्त्री की चीखें सुन कर शमशान-भूमि पर आई लड़कियां या अन्य स्त्रियां डर न जाएं। कुछ आदमी लंबे-लंबे बांस लेकर खड़े रहते। सती होने वाली स्त्री डर के मारे और रोती-चीखती चिता में से बाहर कूदने का यत्न करती, तो उसे वे लोग लंबे बांस के साथ धकेल कर अंदर कर देते थे। वे लंबे बांस इसलिए पकड़ते थे, ताकि उनको सेंक न लगे। श्री गुरु अमरदास जी उच्चारण करते हैं कि उन स्त्रियों को सती नहीं कहा जा सकता, जो पति की लाश के साथ जिंदा जल मरती हैं, बल्कि गुरमति अनुसार सती हर वो जीव-स्त्री है जो प्रभु-पति के वियोग में तड़पती है, हर पल प्रभु-पति को पाने को लालायित रहती है, जो प्रभु-वियोग की चोट, पीड़ा को अपने हृदय में महसूस करती है :

सतीआ एहि न आखीअनि
जो मड़िआ लगि जलन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि
जि बिरहे चोट मरन्हि ॥ *(पन्ना ७८७)*

उन स्त्रियों को भी सती ही समझना चाहिए जो अपने खसम की सेवा करती हैं, पतिव्रत-धर्म में रहती हैं, सदा उद्यम से अपना धर्म याद रखती हैं। सती वह भी है जो पति की मृत्यु पर संतोष रखती है; इसको ईश्वरीय आदेश समझकर सहन करती है; अपने पति की याद को सदा मन में याद रखती है :

भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहन्हि ॥
सेवनि साई आपणा नित उठि संम्हालन्हि ॥
(पन्ना ७८७)

(सती) स्त्रियां अपने पति के ज़िंदा रहते उसकी सेवा करती हैं, पति को अपना समझती हैं और दुख-सुख में बराबर साथ निभाती हैं। जिन्होंने पति को पति न जाना, वे क्यों दुख सहें? पति चाहे सुखी हो या दुखी, वे कठिन समय में निकट नहीं आती :

कंता नालि महेलीआ सेती अगि जलाहि ॥
जे जाणहि पिरु आपणा ता तनि दुख सहाहि ॥
नानक कंत न जाणनी से किउ अगि जलाहि ॥
भावै जीवउ कै मरउ दूरहु ही भजि जाहि ॥
(पन्ना ७८७)

जिस पत्नी को अपने पति से सच्चा प्यार है, वह पति की मौत पर वास्तव में दुखी होती है। ऐसी स्त्री जिंदा ही सती है। जिसको पति की कद्र नहीं या जिसके साथ प्यार नहीं, उसका पति की लाश के साथ जल मरना फ़िज़ूल है।

श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्खों को हुकमनामे भेजे कि किसी स्त्री को सती न होने दिया जाए। बाद में सती रस्म को बंद करने का राजकीय हुक्म अकबर ने सन् १५८४ ई में किया। इस हुक्म के अधीन किसी को कोई जबरन सती नहीं कर सकता, परंतु मर्ज़ी से औरत सती हो सकती थी।

उस समय विवाह अक्सर अपनी जाति में ही हुआ करते थे। तथाकथित ऊंची जाति वाले तथाकथित नीची जाति में विवाह नहीं करते थे। अगर कोई स्त्री ऐसा करती तो वह दंड की अधिकारी होती। ऊंची जाति के पुरुष और निम्न जाति की औरत से जो बच्चा पैदा होता उसे चंडाल कहा जाता। श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्खों में गरीब-अमीर और जात-पांत की दृष्टि को बदला। साखियों में ज़िक्र आता है कि भाई सच्चन सच का विवाह जात-पांत के विचार के बिना किया। गुरु साहिब ने अपनी

Final

सुपुत्रियों का रिश्ता भी बिना श्रेणी-विचार से किया। बीबी दानी जी का रिश्ता भाई रामा जी के साथ किया। भाई रामा जी की घरेलू हालत बहुत साधारण थी। भाई जेठा जी (जो कि घुंगणियां बेचकर गुज़ारा करते थे) के साथ बीबी भानी जी का रिश्ता किया। गुरु साहिब की बख़्शिश से प्रेमा नाम का कुष्ठ रोगी ठीक हो गया। गुरु जी ने उसका नाम मुरारी रखकर शीहे उप्पल की पुत्री का विवाह उसके साथ किया।

उस समय पुरुष अपनी पत्नी के मरने के बाद दूसरा विवाह करवा सकता था, परंतु स्त्री को पति के साथ ही मरना पड़ता था। शास्त्रों में विधवा विवाह की मनाही है।

श्री गुरु अमरदास जी ने विधवा विवाह की आज्ञा दी। फास्टर ने अपने सफरनामे में लिखा है कि विधवा विवाह की आज्ञा श्री गुरु नानक देव जी कर गए थे और श्री गुरु अमरदास जी ने उसी को व्यवहारिक रूप प्रदान किया।

नशे (जो कि मानव शरीर के लिए नुकसानदेय हैं) के इस्तेमाल से दिमागी संतुलन कायम नहीं रहता, अच्छे-बुरे की तमीज़ नहीं रहती। इस सामाजिक बुराई से बचना चाहिए। श्री गुरु अमरदास जी उच्चारण करते हैं कि विकारों में फंसा मानव शराब आदि कुकर्म में पड़ता है, जिसके पीने से अक्ल दूर हो जाती है और मंदे बोल बोलने का जोश आ जाता है। अपने-पराए की पहचान नहीं रहती। मालिक की तरफ से धक्के पड़ते हैं। जिसके पीने से प्रभु-खसम भूल जाता है और प्रभु-दर पर सज़ा मिलती है, ऐसी गंदी चीज को कभी नहीं पीना चाहिए :

आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥
जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥
(पन्ना ५५४)

तिथि-वार मनाना माया का मोह पैदा करने का कारण बनते हैं, मेर-तेर पैदा करते हैं। सब दिन, ऋतुएं, मौसम परमात्मा के ही बनाए हुए हैं। मूर्ख मनुष्य ही तिथि-वार मनाते हैं :

थिती वार सेवहि मुगध गवार ॥ (पन्ना ८४३)

पुराणों के अनुसार मनुष्य के मरने पर कई रीतियां की जाती हैं। गुरु साहिब ने मनुष्य के मरने पर रीतियों बाबत उपदेश दिए, उनको श्री गुरु अमरदास जी के पड़पोते (बाबा मोहरी जी के पोते और बाबा अनंद जी के सुपुत्र) बाबा सुंदर जी, जो श्री गुरु अमरदास जी के अंतिम समय उनके पास बैठे थे, ने 'सद' शीर्षक वाली छः पउड़ियों की बाणी में उच्चारण किया।

मनुष्य के मरने पर (शास्त्रों की मर्यादा के अनुसार) उसे खाट (या पलंग) से उतार कर नीचे ज़मीन पर लिटा दिया जाता है। कई आटे का दीया जला देते हैं और ब्राह्मण को भेटा के लिए चांदी-सोने का सिक्का दिया जाता है।

शरीर के दाह संस्कार से पहले आटे के पेड़े पत्तलों पर रख कर मनसाए (दान करना) जाते हैं। सूरज की तरफ मुंह करके चुलियां भी भेंट की जाती हैं। यह ख्याल किया जाता है कि खुराक बिछुड़ी आत्मा को मिलेगी।

जिस फट्टे पर मुर्दा शरीर उठाकर ले जाया जाता है, उस फट्टे को फूलों से सजाया जाता है। बड़ी उम्र के प्राणी के पोते-पड़पोते ऊपर से मखाने-छुहारे-पैसे आदि फेंकते हैं। इस रस्म को बिबाण (सजाकर निकाली अर्थी) निकालना कहा जाता है।

(शेष पृष्ठ ३८ पर)

Final

श्री गुरु अमरदास जी

*-स. दमनजीत सिंघ**

श्री गुरु अमरदास जी का जन्म गांव बासरके, ज़िला श्री अमृतसर साहिब में श्री तेजभान जी तथा माता सुलक्खणी जी के घर हुआ। गुरु जी के माता-पिता बड़े धार्मिक जीवन तथा शांत व सच्चे स्वभाव वाले थे। धार्मिक विचारों का असर गुरु जी को विरासत में मिला।

गुरु साहिब की शादी गांव सणखतरा, ज़िला श्री अमृतसर साहिब में श्री देवी चंद जी की सुपुत्री माता राम कौर जी के साथ हुई। गुरु जी की संतान में दो सुपुत्र-- बाबा मोहन जी व बाबा मोहरी जी तथा दो सुपुत्रियां-- बीबी दानी जी व बीबी भानी जी हुईं। गुरु जी कारोबारी व गृहस्थी होने के साथ-साथ भजन-बंदगी एवं सतसंग में गहरी रुचि रखते थे। उन्होंने उस समय में, जब आवागमन के साधन नहीं थे, इक्कीस बार पैदल हरिद्वार की यात्रा की।

श्री गुरु अमरदास जी तीन भाई थे। इनमें से एक भाई के सुपुत्र के साथ श्री गुरु अंगद देव जी की सुपुत्री बीबी अमरो जी ब्याही हुई थीं। नित्तनेम के अनुसार एक दिन बीबी अमरो जी अमृत वेले उठकर दूध बिलो रही थीं तथा साथ ही गुरबाणी-पाठ कर रही थीं। मधुर गुरबाणी की धुन श्री गुरु अमरदास जी के कानों में पड़ी तो उनका मन बाणी की तरफ खिंचा चला गया तथा मन में शांति-प्राप्ति का अनुभव हुआ। जब बीबी अमरो जी दूध बिलो चुके तो श्री गुरु अमरदास जी ने पूछा "सुपुत्री! यह बाणी किसकी पढ़ रही थी?" बीबी अमरो जी ने उत्तर दिया कि "यह परम पवित्र बाणी श्री गुरु नानक देव जी की है, जिनकी विरासत में इस समय मेरे पिता श्री गुरु अंगद देव जी विराजमान हैं।" यह उत्तर सुनकर श्री गुरु अमरदास जी के मन में श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन करने की लालसा प्रबल हो गई।

बीबी अमरो जी से बाणी सुनना गुरु-मिलाप का साधन बन गया। बीबी अमरो जी को साथ लेकर श्री गुरु अमरदास जी श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन करने के लिए खडूर साहिब पहुंचे। श्री गुरु अमरदास जी गुरु महाराज के चरणों में हाज़िर हुए तथा दर्शन करके निहाल हो गए। उन्होंने गुरु जी के सामने प्रार्थना की कि मुझे अपने चरणों में निवास तथा संगत की सेवा का सौभाग्य प्रदान करो। श्री गुरु अंगद देव जी ने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली।

श्री गुरु अमरदास जी द्वारा ब्यास दरिया से जल लाकर श्री गुरु अंगद देव जी को स्नान करवाना, लंगर की सेवा करनी, झाड़ू लगाना, बर्तन साफ करना, पंखा झलना तथा प्रसाद तैयार करके संगत को छकाने की सेवा की। गुरु जी की बाणी में फरमान है :

गुरु की कार कमावणी भाई
आपु छोडि चितु लाइ ॥

**८९७, फेज़-१०, मोहाली-१६००६२*

Final

सदा सहजु फिरि दुखु न लगई भाई हरि आपि वसै मनि आइ ॥ *(पन्ना ६३९)*

श्री गुरु अंगद देव जी के हुक्म से श्री गुरु अमरदास जी ने गोइंदा नामक सिक्ख की ज़मीन पर गोइंदवाल साहिब नगर बसाया। वहां लोगों की पानी की सुविधा के लिए एक बावली बनवाई। यही नगर बाद में श्री गुरु अमरदास जी द्वारा किए गए सिक्ख धर्म के प्रचार के केंद्र के रूप में विख्यात हुआ।

श्री गुरु अंगद देव जी के ज्योति-जोत समा जाने के बाद श्री गुरु अमरदास जी सिक्ख धर्म के तीसरे गुरु के रूप में शोभायमान हुए।

सामाजिक कुरीतियों में सुधार के लिए . . . *(पृष्ठ ३६ का शेष)*

घर से बिबाण ले जाते समय मिट्टी का कोरा घड़ा साथ ले जाया जाता है। शमशान घाट पर पहुंच कर घड़ा तोड़ा जाता है। मृतक का पुत्र बहुत ऊंची आवाज़ में धाह मारता है। यह (भ्रम-मूलक) विचार माना जाता है कि भयानक धाह की आवाज़ सुनकर मृतक की आत्मा, जो शरीर के मोहवश उसके आस-पास मंडराती फिरती है, डर कर चली जाती है।

शरीर भस्म होने के बाद बची अस्थियां गंगा में प्रवाह करनी जरूरी मानी जाती थीं। ऐसा न करने पर मृतक प्राणी की गति नहीं हो सकती।

यह भी ख्याल किया जाता था कि मृतक प्राणी की आत्मा (मरने के बाद) तेरह दिन तक प्रेत बनी रहती है। आत्मा घर के आस-पास ही घूमती रहती है।

मृतक की आत्मा को प्रेत-योनि में से निकाल कर पित्तर लोक तक पहुंचाने के लिए क्रिया की जाती है। वहां पहुंचने के लिए ३६० दिन लगते हैं। क्रिया पंडित करते हैं।

गुरु साहिब ने अंतिम समय यह उपदेश दिया कि बाद में किसी ने रोना नहीं यां धाह नहीं मारनी, बल्कि कीर्तन करना है। व्यक्ति प्रभु की रज़ा के अनुसार आता है और चला जाता है। रोना नहीं चाहिए। आशीष देनी चाहिए। आत्मा का प्रेत बन कर फिरते रहना निर्मूल विचार है। पिंड, पत्तल और क्रिया भी भ्रम है। यहां जगाया हुआ दीया परलोक के रास्ते को रोशनी नहीं दे सकता। आगे की खुराक नाम ही है। वहां रास्ते में रोशनी भी नाम-रूपी दीया ही करता है। गंगा में फूल (अस्थियां) डाल देने से गति नहीं होती। आत्मा ने शरीर द्वारा जो कर्म किए हैं, गति तो उसी के द्वारा संभव है। बिबाण निकालना फिजूल क्रिया है :

अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥ *(पन्ना ९२३)*

Final

छोटी बातें-बड़ी बातें

*-प्रो शाम लाल कौशल**

छोटे तथा बड़े होने का विवाद तो तब से चल रहा है, जब से ईश्वर ने इस सृष्टि की रचना की है। बड़ा तो बड़ा ही होता है। दुनिया में बड़े का अपना ही स्थान है, लेकिन इसका मतलब यह कतई नहीं कि छोटे की दुनिया में कोई अहमियत नहीं। चींटी को देखिए, हाथी को मार देने की ताकत रखती है। घर में पैदा हुआ शिशु किस तरह खुशियां बिखेर कर माहौल को खुशगवार बना देता है, हम सब जानते हैं। छोटा-सा दीया जिस कद्र अंधेरे को दूर कर देता है, वह तो हैरानी की बात है। छोटे साहिबज़ादों की शहादत बड़ों-बड़ों को गौरवान्वित कर गई। हमें कभी भी छोटे को छोटा समझकर उसकी अवहेलना नहीं करनी चाहिए।

अगर हम छोटी-छोटी बातों पर अमल करें तो जीवन को सुखी, सफल, संतुष्ट बना सकते हैं। ये छोटी-छोटी बातें वे हैं जिन्हें हमारे माता-पिता, गुरुजन, धार्मिक गुरु, शुभचिंतक लोग तथा मित्रगण बताते रहते हैं और उन्हें हम जानते भी हैं, जैसे खाना सदा हाथ-मुंह धोकर, धीरे-धीरे तथा चबाकर खाना चाहिए। खाना कभी भी चलते-चलते तथा बोलते हुए नहीं खाना चाहिए। रात को खाना खाकर उसी समय सोना नहीं चाहिए। भूख से ज्यादा खाना नहीं चाहिए। अगर हम ऐसा करेंगे तो हमारे बीमार होने के चांस बहुत कम होंगे।

रात को देर रात तक नहीं जागना चाहिए। कम से कम आठ घंटे का विश्राम ज़रूरी है। इससे हमारे शरीर तथा दिमाग को आराम मिलता है। सोने से पहले दिन भर की गतिविधियों की तरफ से ध्यान हटा कर केवल अपने आराध्य ईश्वर की तरफ अपना ध्यान केंद्रित करें, चैन की नींद आ जाएगी। रोज़ सुबह-शाम कम से कम आधा घंटा सैर करें, व्यायाम करें। (अगर किसी तरह किसी रोग से पीड़ित हैं तो ऐसा अपने चिकित्सक की सलाह से करें।)

अगर खुश तथा सुखी रहना है, तो मुसीबत या कठिनाई आने पर हिम्मत न हारें। धैर्य रखें। संयम बरतें। इसके निपटारे के लिए किसी बुजुर्ग या अनुभवी शुभचिंतक से सलाह लें या फिर उसकी मदद लें, जो इस प्रकार की मुसीबत से गुज़र कर सफल हो चुका हो या जिसने किसी को किसी मुसीबत से उबरते देखा हो। परमात्मा पर भरोसा रखें तथा आशा करें कि सब ठीक हो जाएगा। वक्त बड़ी-बड़ी मुश्किलों को हल करने की भी क्षमता रखता है। हंसते-हंसते हर स्थिति को परमात्मा की मर्जी मानकर स्वीकार करें। अगर ज़िंदगी में कभी कोई गलती या कसूर हो जाए तो अपनी भूल का पश्चाताप करें और भूल सुधारने की कोशिश करें। भविष्य में इस किस्म की भूल फिर न दोहराने का भी दृढ़ निश्चय करें। हमारी गलती से अगर किसी का मन दुखी हुआ हो तो उससे क्षमा-याचना करके अपने मन के

**९७५-बी/२०, राजीव निवास, शक्ति नगर, ग्रीन रोड, रोहतक-१२४००१, फोन : ९४१६३५९०४५*

Final

बोझ को कम करें। इसी तरह अगर कोई जाने-अनजाने में हमें चोट पहुंचाए, तो Forgive and Forget की नीति अपनाएं। किसी के प्रति निरंतर ईर्ष्या, क्रोध या वैर-भावना रखने से दूसरे का नुकसान हो या न हो, लेकिन हमारे मन की शांति में विघ्न जरूर पहुंचेगा। किसी का अपराध भूल जाने या माफ कर देने से हम सुख की नींद सो सकेंगे।

अपने माता-पिता, गुरु-जनों के प्रति श्रद्धा-भावना तथा सम्मान होना चाहिए। इनकी सेवा करके आशीर्वाद लेना चाहिए। ऐसा करने से ज्ञान में वृद्धि होती है, मन को शांति मिलती है तथा अच्छे संस्कारों को बढ़ावा मिलता है। अगर हम अपने माता-पिता का कहना मानेंगे, सेवा करेंगे, तभी हमारे बच्चे अच्छे संस्कार सीख सकेंगे। बच्चों को ईमानदारी तथा परिश्रम की कमाई का ही खाना खिलाएं। बेईमानी के पैसे से उनकी शिक्षा, दीक्षा, लालन-पालन करने से बच्चों की मानसिकता तथा व्यवहार पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों को अपने माता-पिता (दादी-दादा) के साथ मिलने-जुलने तथा खेलने दें। उन्हें दादा-दादी तथा नाना-नानी का सानिध्य अवश्य दें। हमें चाहिए कि हम न केवल अपने अमीर रिश्तेदारों तथा मित्रों से सम्बंध बनाए रखें, बल्कि अपने गरीब रिश्तेदारों, मित्रों तथा परिचितों को भी मान-सम्मान दें। हमें चाहिए कि जब कोई दूसरा बोल रहा हो, अपनी बात समाप्त करके जब वह चुप हो जाए, हमें तभी बोलना चाहिए। बीच में टोका-टाकी ठीक नहीं होती। जब घर में कोई अतिथि आए तो उसे उचित सम्मान दें। उसे घर में उचित स्थान पर बिठाकर उसके साथ खुद बैठें। घर आए व्यक्ति का कभी निरादर न करें। बहुत सारा धन-दौलत मिल जाने पर हमें अहंकार नहीं करना चाहिए, बल्कि परमात्मा का शुक्र करना चाहिए। अगर ज़िंदगी के बुरे दिन होने के कारण हमें अभाव की स्थिति का सामना करना पड़ रहा हो, तो समय, सब्र तथा परमात्मा द्वारा अच्छे दिन दिए जाने का इंतज़ार करना चाहिए-- "सब दिन होत न एक समान।" किसी से किया कोई वायदा अवश्य पूरा करें। क्रोध में आकर कोई निर्णय न लें। आम तौर पर क्रोध में लिया हुआ निर्णय गलत ही होता है। किसी बात का लालच न करें। लालच को संतोष से जीतें। किसी पर विश्वास तो करें, लेकिन अंधविश्वास न करें। अपनी आमदनी के मुताबिक खर्च करें। मुसीबत के दिनों के लिए कुछ बचत जरूर करें। ईश्वर तथा मौत को सदा याद रखते हुए बुरे कार्यों से बचें। चिंता न करें, परमात्मा का चिंतन करें। मन पर नियंत्रण रखें। तनाव की स्थिति होने पर लंबे सांस लें तथा पानी पियें। सौ बात की एक बात, जीवन को सादगी व हिम्मत से जीते हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से बच कर किरत करें, नाम जपें और बांट कर खाएं।

Final

महान रणनीतिकार थे सरहिंद फ़तह के नायक बाबा बंदा सिंघ बहादुर

*-बीबी संदीप कौर**

वैरागी से 'गुरु का बंदा' बनने वाले बाबा बंदा सिंघ बहादुर का जीवन-सफर आत्मिक गहराई और आश्चर्यचकित करने वाली घटनाओं से ओत-प्रोत है। मनुष्य जब अपने अंदर बदलाव महसूस करता हुआ अपनी आत्मिक शक्ति के माध्यम से अपने को बदलने का हुनर रखे, उस वक्त उस मनुष्य का सम्पूर्ण व्यक्तित्व उभर कर सामने आता है। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सिक्ख धर्म अपनाने के पश्चात् अपने आप को संपूर्ण रूप से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को समर्पित कर दिया। इसी समर्पण के साथ बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने जंतर-मंतर आदि का मार्ग त्याग वास्तविक रूप से कुछ कर गुजरने की ठान ली।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'बंदे' की परिभाषा भक्त कबीर जी ने अकाल पुरख के हुक्म की पहचान कर उसे मानने वाले मनुष्य के रूप में की है :

हुकमु पछानै सु एको जानै बंदा कहीऐ सोई ॥
(पन्ना १३५०)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की विशिष्ट सूझबूझ और दूरदेशी सोच ही थी जो बाबा बंदा सिंघ बहादुर को पंथक नेता के रूप में सामने लाई। गुरु जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर को हुकमनामा, पांच तीर, निशान साहिब और नगाड़ा बख़्शिश किया। शाबाशी देते हुए 'बहादुर' का खिताब दिया। भाई विनोद सिंघ, भाई कान्ह सिंघ, भाई बाज सिंघ, भाई दइआ सिंघ, भाई रण सिंघ के रूप में पांच प्यारे और २५ अन्य सिंघ देकर बाबा बंदा सिंघ बहादुर को पंजाब भेजा, ताकि वे मज़लूमों के रक्षक, बेसहारों का सहारा बन दुष्टों और अत्याचारियों का नाश करें। बाबा बंदा सिंघ बहादुर का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों, शासन को निशाना बनाना था जो आम जनता पर जुल्म करते थे।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सरहिंद की जंग सिक्ख इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हुक्म की पालना करते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादुर सोनीपत, समाणा, घुड़ाम, कपूरी, ठसका, शाहबाज कुंजपुरा, मुस्तफाबाद, साढौरा, छत बनूड़ पर विजय का केसरी झंडा झुलाते हुए सरहिंद की ओर बढ़ने लगे। अनगिनत सिक्ख सैनिक बाबा जी की जत्थेबंदी का हिस्सा बन गए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दो छोटे साहिबज़ादों और माता गुजरी जी पर जुल्म कर उन्हें शहीद करने वाला ज़ालिम वज़ीर खान और उसके प्रशासनिक अधिकारियों की रिहायश सरहिंद होने के कारण वहां बड़े-बड़े महल आदि थे। सिक्खों की सेना के हमले का उद्देश्य किसी राज्य पर अधिकार करना नहीं, बल्कि उनके गुरु के अतिप्रिय साहिबज़ादों को शहीद करने-करवाने वालों को खत्म करना था। कोई भी जंग किसी मकसद के बिना नहीं लड़ी जाती। सिक्खों के मन में न भूलने वाली

**२६-बी/१, कैनेडी एवेन्यू, अलबर्ट रोड, श्री अमृतसर-१४३००१*

Final

ऐसी यादें थीं जो उन्हें अन्याय के खिलाफ कदम उठाने को प्रेरित कर रही थीं।

जब वज़ीर खान को बाबा बंदा सिंघ बहादुर के सरहिंद की ओर आने की सूचना मिली तो उसने जिहाद का ऐलान कर दिया, जिसके फलस्वरूप उसके पास गाजियों और पठानों का बेशुमार समूह एकत्रित हो गया। उसके पास १२ हज़ार सैनिक, ७-८ हज़ार बंदूकची, ५-६ हज़ार घुड़सवार थे तथा बड़ी मात्रा में तोपें, हाथी, बंदूकें, गोला-बारूद आदि भी था, जबकि सिक्खों के पास लड़ने के लिए कृपाणें तथा नेज़े आदि छोटे हथियार ही थे।

१२ मई, १७१० ई को खालसई सेना ने सरहिंद से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर चपड़चिड़ी नामक स्थान पर पड़ाव किया। मध्यम आकार के वृक्ष और पानी की सुविधा ने उन्हें काफी सहारा दिया, जिसे वज़ीर खान ने नज़रअंदाज कर दिया। वज़ीर खान सिक्खों के हमला करने का इंतज़ार करता रहा, जो उसकी सबसे बड़ी भूल साबित हुई। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सेना का निरीक्षण कर उसे योजनाबद्ध रूप से चार प्रमुख भागों में बांटा, जिसमें से भाई बाज सिंघ को दाहिनी ओर रखा गया। बायें भाग में भाई फतहि सिंघ अगुआई कर रहे थे। तीसरे भाग में भाई कान्ह सिंघ के साथ गंडा मल्ल थे। (गंडा मल्ल के साथी डाकू-लुटेरे थे, जो लूटमार के लालच में साथ आ गए थे।) इस टुकड़ी को बीच में रखना बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सेनापति वाली सूझ का कमाल था, जिससे वह टुकड़ी भाग भी न पाए और कोई षड्यंत्र भी न रच पाए।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की योजनानुसार युद्ध की एक रात पहले छोटे से दस्ते के माध्यम से शत्रु सेना पर बार-बार हमले किए गए, जिसका मकसद शत्रु सेना को कच्ची नींद से जगाकर थकाना था। चौथे भाग में एक हज़ार आपातकालीन सेना को लेकर बाबा बंदा सिंघ बहादुर टिल्ले को केंद्र बनाकर रुक गए।

चपड़चिड़ी का युद्ध आरंभ हुआ। कच्ची नींद से जागे वज़ीर खान के सिपाही बदहवास प्रतीत हो रहे थे। दूसरी ओर सिक्ख सेना जयकारों की गूंज के साथ आगे बढ़ी। सिक्खों की एक टोली ने बाबा बंदा सिंघ बहादर के निर्देशानुसार तोपों के दस्ते पर हमला कर उन्हें अपने कब्जे में ले लिया। इससे वज़ीर खान की हार होनी निश्चित हो गई। उन्हीं तोपों की सहायता से हाथियों की बनी दीवार को तोड़ बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने वज़ीर खान को खुद युद्ध करने के लिए मज़बूर कर दिया। वज़ीर खान अपनी सेना का नेतृत्व करने की बजाय खुद हाथी पर चढ़ लड़ने लगा, जिससे उसका ध्यान सेना से हट गया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सेना में जो डाकू-लुटेरे लूटमार के मकसद से आये थे, वे उन्हें धोखा देकर आंख बचाते हुए वज़ीर खान की सेना में शामिल हो गए, जिसके कारण युद्ध के हालात पहले के अनुकूल न रहे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को इस बात का अंदेशा तो पहले से ही था। वे खुद युद्ध-भूमि में कूद पड़े। उनके आते ही चारों ओर विरोधी सेना में 'बंदा आया', 'बंदा आया' के भयग्रस्त नारे गूंजने लगे। शाही सैनिकों में बंदा सिंघ बहादुर का भय युद्ध का पासा पलटने में सहायक सिद्ध हुआ।

खालसई सेना मुगल सेना पर टूट पड़ी।

Final

ऐसा लगने लगा जैसे मुगल सेना बिना सेनापति के लड़ रही हो। युद्ध-भूमि में वज़ीर खान के पुत्र समुंद खान और सिपहसालार अब्दुल समद मारे गए। भाई फतहि सिंघ ने हाथी पर बैठे वज़ीर खान का सिर काट उसे उसके किए गुनाहों और साहिबज़ादों को शहीद करने का दंड दे दिया।

युद्ध की फतह के पश्चात् सिक्ख सेना आगे बढ़ती हुई सरहिंद में दाखिल हुई। सिक्खों के मन में जुल्म के विरोध की आग भड़क रही थी, जो सरहिंद को नष्ट करके ही शांत हुई। मज़लूमों-गरीबों का खून चूसकर जालिमों द्वारा बनाए महल आदि सिक्खों ने मिट्टी में मिला दिए। सरहिंद का युद्ध जुल्म पर सिक्खी-सिद्धांतों की विजय का प्रतीक था। इस युद्ध-वृत्तांत के माध्यम से बाबा बंदा सिंघ बहादुर की रणनीति और उनके सैनिक नेतृत्व के गुणों का पता चलता है। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को उनकी सिक्ख धर्म के प्रति वफादारी, समर्पण और त्याग ने इतिहास में अमर बना दिया। सरहिंद की विजय ने स्वतंत्र सिक्ख राज्य की आधारशिला रखी।

कविता

. . . तो बिहतर है

*-स. सतिनाम सिंघ कोमल**

सदा ही यह तेरे दर का, जो बन जाये तो बिहतर है,
रज़ा तेरी में रहे राज़ी, यह गुन गाये तो बिहतर है।
मुरादों की तमंना है, कबूले मौत यह मन की,
चले न अपनी मर्ज़ी जो प्रभु भाये तो बिहतर है।
गिला, शिकवा नहीं बनता, मुक्कदर में मिला वो ही,
लिखा है जो उसी पर ही, सबर आये तो बिहतर है।
हकीकत क्या है बंदे की, क्या जीवन का मकसद है,
यह तथ्य अपने को, समझ पाये तो बिहतर है।
मनाये खैर यह सब की, किसी दिल को दुखाये न,
बेगाने को समझ अपना, गले लगाए तो बिहतर है।
करे हक सच की बातें, मुशक्कत का धनी बनकर,
किसी के हक पे न दावा, करे खाये तो बिहतर है।
तेरे बस हुक्म में गुज़रे, देना तौफीक ऐ मालक,
तेरी रहमत में गुन कोमल, सदा गाये तो बिहतर है।

**२४८, अरबन अस्टेट, लुधियाना- १४१०१०, फोन : ९४१७३७२३४५*

Final

सिक्खों का पहला घल्लूघारा : खूनी साका काहनूंवान

*-डॉ कशमीर सिंघ 'नूर'**

'साका' शब्द का उपयोग सबसे पहले राजा शालिवाहन के समय में हुआ मिलता है और यह समझा जाता है कि इस शब्द को राजा शालिवाहन ने ही आविष्कृत किया था। 'साका' शब्द की व्युत्पत्ति संभवतः 'शक संवत' से हुई है तथा इसका अर्थ है कि कोई ऐसा काम या कारनामा, जो इतिहास में प्रसिद्ध हो; महत्त्वपूर्ण घटना। 'शक संवत्' को 'सन् बिक्रमी' भी कहा जाता है। यह पुरुष लिंग शब्द है और यह वो 'संवत्' है, जिसे राजा बिक्रमाजीत के नाम पर चलन में माना जाता है। बाद में 'सन्' के पर्याय के तौर पर शब्द 'साल' प्रचलित हो गया।

सिक्खों के गौरवशाली इतिहास में 'साका चमकौर साहिब', 'साका सरहिंद', 'साका काहनूंवान', 'साका पंजा साहिब' आदि अति प्रसिद्ध व उल्लेखनीय घटनाएं अंकित हैं। सिक्ख इतिहास शहादतों का इतिहास है। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर कई-कई शहादतों का वर्णन स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हुआ मिलता है। धर्म, न्याय, सच्चाई, कौम, मानवता की रक्षा एवं भलाई के लिए जीवन और सृष्टि की चढ़दी कला (तरक्की) के लिए जहां महान् सिक्ख गुरुओं ने अपनी लासानी शहादत दी, वहीं साहिबज़ादों, अनेक सिक्ख भुजंगियों, सिंघों और सिंघनियों ने भी कुर्बानी दी। सिक्ख इतिहास को प्रत्येक उम्र के शहीदों ने हर दौर में गौरवशाली बनाया है। जहां अकेले-अकेले सिक्ख ने हंस-हंसकर शहादत का जाम पीया है, वहीं छोटे व बड़े जत्थों के रूप में भी सिक्ख शूरवीरों ने अधर्म, जुल्म तथा अन्याय के विरुद्ध अपना जीवन न्यौछावर किया है। अलग-अलग दौर के ज़ालिम व क्रूर शासकों ने धोखे व छल-कपट से, षड्यंत्र रचकर, नाजायज़ हथकंडे अपनाकर और विपरीत व विकट परिस्थितियां पैदा कर सिक्खों के बच्चों, युवकों, बुज़ुर्गों तथा औरतों का सामूहिक कत्लेआम किया है। ऐसे सामूहिक कत्लेआम को ही सिक्ख धर्म में 'घल्लूघारा' कहा जाता है। हरेक घल्लूघारे ने विश्व व मानव के इतिहास की धारा को नई से नई दिशा प्रदान की। सिक्खों ने प्रत्येक दौर में चुनौतियों को स्वीकार किया है, मुसीबतों का डटकर मुकाबला किया है और अपने दुश्मनों व विरोधियों को नाकों चने चबवाए हैं।

सिक्खों के पहले घल्लूघारा, जिसे 'छोटा घल्लूघारा' भी कहा जाता है, की घटना मई, सन् १७४६ ई में गुरदासपुर के गांव कहानूंवान में घटित हुई थी।

ऐतिहासिक तथ्य है कि ज़करिया खान की मौत के बाद उसका पुत्र यहिया खान पंजाब का गवर्नर बना। उसने लखपत राय को दीवान नियुक्त किया। प्रारंभ में लखपत राय को सिक्खों के साथ कुछ हमदर्दी थी। उस समय जो व्यक्ति सिक्खों का विरोध करता था, उसे सरकार की ओर से इनाम, लाभ आदि मिलता था, अतः वह भी सिक्खों का कट्टर विरोधी बन गया।

लखपत राय का भाई जसपत राय ऐमनाबाद का फौजदार नियुक्त था। उसने लोगों पर बहुत

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

Final

अत्याचार किया। सन् १७४६ ई में अनावश्यक कर लगाकर वसूलना शुरू कर दिया। गरीब लोग दुखी और परेशान हो उठे। वे घर-द्वार छोड़ सिंघों के साथ आने लगे। इसी निर्दयी जसपत राय के पास शहीद हकीकत राय के माता-पिता ने जब मदद की गुहार लगाई थी, तब उसने उन्हें उलटा गलत शब्द बोलकर अपमानित किया था।

सिंघों का एक जत्था घूमते-फिरते ऐमनाबाद पहुंचा और गुरद्वारा श्री रोड़ी साहिब के दर्शन हेतु वहां ठहर गया। यह ऐतिहासिक गुरद्वारा श्री गुरु नानक देव जी की याद में बना हुआ है। पता लगने पर जसपत राय ने सिंघों को अहंपूर्ण आदेश भिजवाया कि तुरंत वहां से चले जाओ, वरना बलपूर्वक तुम्हें निकाल दिया जाएगा। सिंघों ने उत्तर भेजा कि हम कई दिनों की निरंतर यात्रा के कारण थके हुए हैं। एक रात्रि विश्राम करने के बाद चले जाएंगे। हमें शहर में से कुछ चीज़ें खरीदने की आज्ञा दी जाए। जसपत राय ने अनुमति देने की बजाय फौजी दस्ते को साथ लेकर सिंघों पर हमला कर दिया। सिंघ भी मुकाबले में डट गए और थोड़ी-सी झड़प के बाद युवा सिंघ निभाउ सिंघ फुर्ती से अपना घोड़ा जसपत राय के हाथी के निकट ले गया। वह छलांग लगाकर हाथी पर चढ़ गया तथा तलवार से जसपत राय का सिर धड़ से अलग कर दिया। उसकी फौज में खलबली मच गई और वह मैदान छोड़ भाग खड़ी हुई। जसपत राय के सिर के लिए पांच सौ रुपए सिंघों को देकर किरपा राम बचोके ले गया और फिर उसका दाह संस्कार कर दिया।

अपने भाई जसपत राय की मौत की ख़बर पाकर दीवान लखपत राय बदले की आग में जलता हुआ लाहौर के नवाब के पास पहुंचा। उसके पैरों में अपनी पगड़ी रखकर कहा, "अब यह पगड़ी मैं तभी उठाऊंगा, जब आप यह वचन देंगे कि सिक्खों का नामो-निशान मिटा दिया जाएगा।"

इस पर नवाब ने सिक्खों की गिरफ्तारियों और नरसंहार का खुल्लम-खुल्ला आदेश जारी कर दिया।

लाहौर में रहने वाले सभी सिक्खों को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार किए गए सभी सिक्खों को १० मार्च, १७४६ ई को शहीद कर दिया गया। साथ में ढिंढोरा पिटवा दिया गया कि कोई गुरबाणी नहीं पढ़ सकता। सिक्ख गुरुओं का नाम लेने वालों को कड़ी सज़ा दी जाएगी। श्री अमृतसर साहिब के पवित्र सरोवर को मिट्टी से भर दिया गया। सिक्खों की कोई भी धार्मिक पुस्तक मिलने पर उसे कुएं या नदी में फिकवा दिया गया। सिक्खी की पहचान मिटाने हेतु एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया गया। 'गुड़' को 'रोड़ी' कहने का आदेश दिया गया, ताकि 'गुड़' का उच्चारण करते समय कोई भूल से 'गुर' या 'गुरु' न कह दे। ऐसा करने पर भी लोगों को दंडित किया जाने लगा था। मुगल सरकार के असीम अत्याचार के बावजूद मुट्ठी भर जांबांज़ सिंघों ने धर्म-युद्ध छेड़ रखा था। जंगलों और घोड़ों की काठियों को उन्होंने अपना ठौर-ठिकाना बना रखा था तथा गुरिल्ला युद्ध की नीति अपनाते हुए ज़ालिम सरकार की नाक में दम कर रखा था। भाई बोता सिंघ एवं भाई गरजा सिंघ दो स्वाभिमानी योद्धा सिंघ ज़ालिम सरकार के विरुद्ध जूझते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। दीवान लखपत राय और नवाब यहिया खान के निर्देशन में एक बड़ी सरकारी सेना सिक्खों को नेस्तनाबूद करने हेतु चल पड़ी थी।

उन दिनों हज़ारों सिंघ काहनूंवान के जंगल में ठहरे हुए थे। घरों व गांवों में रहना कठिन था,

Final

अत: जंगल व बीहड़ ही ठिकाना था। काहनूंवान के जंगल को लखपत राय ने आग लगवा दी। सिंघों का वहां रहना कठिन हो गया। वे वहां से निकलकर रावी दरिया को पार कर कठुआ की ओर चले गए। सरकारी सेना का ज़ोर व दबाव बढ़ने पर सिंघ वसौली की तरफ चल पड़े। वहां सिंघों को पहाड़ी क्षेत्र के वासियों की मदद मिलने की बजाय कड़े विरोध का सामना करना पड़ा। पहाड़ी क्षेत्र के लोगों ने बंदूकों की गोलियां बरसाकर सिंघों का 'स्वागत' किया। एक तरफ पहाड़ और पहाड़ी-वासियों का निंदनीय व्यवहार तथा दूसरी तरफ दरिया था। पीछे भारी संख्या में फौज लगी हुई थी। सिंघों के पास न तो पर्याप्त अस्त्र थे और न ही खाद्य-सामग्री थी। कई दिनों तक भूखे रहने के कारण उनके घोड़े भी कमज़ोर हो गए थे। सिंघों ने निर्णय लिया कि वे माझा क्षेत्र की तरफ कूच करेंगे, परंतु रावी नदी उफान पर थी और उसे पार करना कठिन था। पानी की गहराई भांपने हेतु स. गुरदिआल सिंघ दोलूवाल के दो भाइयों ने नदी में छलांग लगाई, लेकिन वे पुन: बाहर न निकल सके।

आखिर फैसला किया गया कि पैदल चलने वाले एक अन्य पहाड़ी क्षेत्र मंडी की ओर चले जाएं और घुड़सवार सिंघ शत्रु-सेना को चीर अपना रास्ता बनाएं। भाई सुक्खा सिंघ के नेतृत्व में सिंघ सरकारी सेना पर टूट पड़े। वे घिर गए। सैंकड़ों सिंघ लड़ते हुए शहीद हो गए। शेष जंगल में पहुंच गए। वहां पर भी उन पर हमला हुआ और अनेक सिंघ लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। बच्चों, औरतों तथा वृद्धों के इर्द-गिर्द घेरा बनाकर सिंघों ने उन्हें बचाने की भरपूर कोशिश की, मगर ज़ालिम मुगल फौज ने बच्चों, महिलाओं और वृद्ध-जनों को भी शहीद कर दिया। जंगल में कोहराम मच गया और लाशों के ढेर लग गए। कुछ बचे हुए सिंघ दरिया ब्यास पार कर दोआबा क्षेत्र की ओर बढ़ने लगे। लखपत राय ने पीछा कर उनमें से कई सिंघों को शहीद कर दिया।

महान् सिक्ख इतिहासकार व विद्वान डॉ. गंडा सिंघ ने लिखा है कि "लखपत राय ने अपने इस अभियान के अंतर्गत, जिसे 'छोटा घल्लूघारा' कहते हैं, सात हज़ार सिंघों को शहीद किया। तीन हज़ार सिंघों को गिरफ्तार कर वह अपने साथ लाहौर ले गया। वहां उन्हें भी घोर यातनाएं देकर शहीद कर दिया गया।" भगत लछमण सिंघ ने अपनी अंग्रेज़ी पुस्तक 'Sikh Martyrs' में लिखा है कि "इस मुकाबले में २२ हज़ार सिंघों ने भाग लिया और मुश्किल से १० हज़ार सिंघ ही बचकर मालवा उपक्षेत्र में पहुंचे। उनके लिखे अनुसार १२ हज़ार सिंघ इस घल्लूघारा में शहीद हुए।

ज्ञानी भजन सिंघ अपनी किताब 'साडे शहीद' में वर्णन करते हुए लिखते हैं कि "लखपत राय व उसके हाकिमों का ख्याल था कि उन्होंने सिक्खों को खत्म कर दिया है, परंतु यह उनका भ्रम था, जो शीघ्र ही दूर हो गया। छोटा घल्लूघारा के जल्दी बाद ही सिंघ मिसलें संगठित कर पूरे पंजाब में छा गए। असंख्य कुर्बानियां देकर एवं क्षति उठाकर सिंघों ने दिल नहीं छोड़ा और आखिर देश की सबसे शक्तिशाली ताकत 'बेहतरीन कौम' बन गए। आज तक सिक्खों के नाम का डंका पूरे विश्व में बज रहा है। यह डंका हमेशा बजता रहेगा।"

सन् १९८४ में निर्दोष सिक्खों के सामूहिक नरसंहार को भी 'घल्लूघारा' ही कहना चाहिए। इस घल्लूघारा को भी सिक्ख कभी भुला नहीं सकते। अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को बहुसंख्यक समुदाय तथा सरकारों के अत्याचार एवं अन्याय का हमेशा शिकार होना पड़ा है। इस पर विश्व स्तर पर चर्चा होनी चाहिए।

Final

भगतु जो भगता ओहरी . . .

*-स. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा**

भाई भगता और भाई जापू करतारपुर साहिब आए तो श्री गुरु नानक पातशाह के दर्शन कर प्रसन्न हुए। गुरु-दरबार में संगत बैठी हुई थी। मधुर कीर्तन हो रहा था। श्रोता सुन कर आनंदचित्त हो रहे थे। कीर्तन के बाद दोनों ने खड़े हो प्रार्थना की, "हे कृपा के दाता! जो विद्या जानते ज्ञानी हैं, उनका उद्धार हो जाएगा। हम न तो ज्ञानी हैं, न हमारे पास विद्या है और हम पढ़-समझ भी कुछ नहीं सकते। फिर हमारा अज्ञानियों का उद्धार कैसे होगा?" सतिगुरु ने भाई भगता और भाई जापू की आशंका जानी और वचन किया, "हे भाई! मनमुखों के कर्म का त्याग करो और गुरसिक्खों की सेवा किया करो, उद्धार हो जाएगा।"

सुनि कै बोले श्री गुर तबिही।
मनमुख करम तजहु जे सभि ही।
तबि होवहि कलयान तुमारा।
बहुर ना पावहुगे संसारा।

(गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पृष्ठ ११२८)

"पातशाह जी! मनमुखों वाले कर्म क्या हैं? कृपा करो और हमें अल्प बुद्धि वालों को समझायो?" कृपा के दाते दातार सतिगुरु जी बोले, "मनमुखों की चार साखियां हैं। पहली-- ईर्ष्या, दूसरी-- अकड़, तीसरी-- निंदा, चौथी-- हठ-वृत्ति।"

मनमुख के कर्मों में पहली ईर्ष्या है। हर जीव के साथ कंजूसी करनी कि जगत की सारी वस्तुएं और सभी गुण मेरे पास ही हों, दूसरे किसी के पास न हों; दूसरे की धन-दौलत देख कर अंदर से जलना, सबको अपना शत्रु समझना, ये सब ईर्ष्या की निशानियां हैं। सबसे पहले इसका त्याग करना है।

दूसरी है-- अकड़ रखना। सदा अहंकार में रहना। मैं-मैं करते फिरना। दूसरे को अपने से छोटा समझना। कोई ज्ञान की बात न बताना। कोई वस्तु मांगे या कोई पूछे तो देने या बताने की बजाय उस पर हंसना और घमंड में रहना कि मेरे जैसा कोई नहीं है :

जे निज ते घटि देखहि तेई।
तिहको मति नहिं कैसे देई।
हासी करै धरैं हंकारा।
इहु नहिं सम ममबुधि उदारा।

(गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पृष्ठ ११२९)

तीसरी है-- निंदा। अगर कोई अपने से अच्छा हो और उसकी कोई प्रशंसा करे तो सह न सकना, इसके विपरीत उसके अवगुण गिनना कि वह मेरा देखा हुआ है। अगर अपने समान हो तो गर्व करना, ईर्ष्या करनी और कहना कि मेरे में बहुत गुण हैं। मैं बड़ा हूं। वो क्या चीज़ है?

चौथी है-- हठ-वृत्ति। अगर कोई उपदेश न माने, बात न सुने तो उसे ज़ोर के साथ हठ करके कहना, उलटा क्रोध किए जाना,

**सचिव, धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु प्र कमेटी), श्री अमृतसर-१४३००६, फोन : ९८१४८९८२१२*

Final

गुस्से में जलते रहना। यह मनमुख की हठ-वृत्ति है।

इस तरह ये साखियां मनमुखों की हैं। इनका त्याग कर, गुरसिक्खों को विनम्र बनकर, धर्म की किरत कर बांट कर खाना चाहिए :

--सिक्खन को गुरदेव सम जानहि मन करि नींव।
धरम क्रित करि जगत महिं खावहि वंड सदीव ॥५३॥
--अस उपदेश गुरू को सुनिकै।
मनयो, मन कीनो सुभ सुनिकै।
बरतन लगे जगत महिं ऐसे।
कंवल होवहि प्रापति जैसे ॥५४॥

(गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पृष्ठ ११२१)

इस तरह भाई भगता और भाई जापू ने मनमुखी कर्म त्याग दिए। उनकी भक्ति और सेवा की कमाई के बारे में भाई गुरदास जी ने लिखा है :

भगतु जो भगता ओहरी जापूवंसी सेव कमावै।
(वार ११:१४) ❂

कविता

दुख

*-डॉ कीर्ति केसर**

दुख हमारे अपने होते
जो परिचय करवाते हमारा अपनों से।
दुख है एक परीक्षा की घड़ी
आत्म-बल परखने की विद्या।
दुख है धैर्य को समर्पित
न जी चुराओ इनसे
बल्कि स्वागत करो
क्योंकि जीवन और दुखों का
चोली-दामन का है साथ।
हो जाओ दर्द के सागर को समर्पित
उसी सागर में गोता लगाने के बाद
तुमको मिलेगा सुख रूपी सुच्चा मोती
जो देगा तुम्हें जीने का साहस
और आत्म-बल बढ़ाएगा तुम्हारा!
जीवन महायुद्ध है
सुख और दुख के बीच का
जिसमें कभी सुख की
तो कभी दुख की विजय होती।
यही जीवन है,
क्योंकि वक्त का पहिया यूं ही चलता जाता है।
दुख के बाद सुख और सुख के बाद दुख
अवश्य ही आता है।

**१०८६/ए, मोहल्ला गोबिंदगढ़, एस डी कालेज रोड, जलंधर-१४४००१, फोन : ९८७८७८४०१६*

Final

ख़बरनामा

गतका पेटेंट करवाने वालों के विरुद्ध शिरोमणि गु प्र कमेटी कानूनी कार्यवाही करेगी : भाई लौंगोवाल

श्री अमृतसर : १८ मार्च : बाणी और बाणे पर आधारित शस्त्र-कला 'गतका' को दिल्ली की एक फर्म द्वारा सिक्ख शस्त्र-विद्या और 'गतका' नाम को ट्रेड मार्क कानून के अंतर्गत पेटेंट करवाने की सख़्त शब्दों में निंदा करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने संबंधित फर्म को ताड़ना की है। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम अपने इतिहास और विरासत के साथ जुड़ी गुरु-बख़्शिश पुरातन विरासती युद्ध-कला के साथ छेड़छाड़ करने की इजाज़त नहीं देगी। उन्होंने कहा कि यह मामला श्री अकाल तख़्त साहिब के विचाराधीन है। इस सारी बात के लिए कौन-कौन जिम्मेदार है, इसकी पूरी जांच की जाएगी। उन्होंने संबंधित फर्म को तुरंत अपनी गलती के लिए सिक्ख कौम से माफी मांगने के लिए कहा। भारतीय ट्रेड मार्क कानून के अनुसार नई खोज को ही पेटेंट करवाया जा सकता है। गतका और सिक्ख शस्त्र-विद्या हमारे धर्म, विरासत एवं गुरु-इतिहास का अटूट अंग तथा समूची कौम की विरासत है। यह किसी की निजी संपत्ति नहीं है। उन्होंने कहा कि फर्म की इस भद्दी हरकत से सिक्ख कौम में आक्रोष व्याप्त है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गु प्र कमेटी इस हरकत की सख़्त शब्दों में निंदा करते हुए संबंधित फर्म को ताड़ना करती है कि वह तुरंत अपनी गलती की सिक्ख कौम से माफी मांग कर इसे वापस ले, नहीं तो सख़्त कानूनी कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने कहा कि कानूनी कार्यवाही के लिए वकीलों के साथ विचार-विमर्श किया जा रहा है।

खिजराबाद में समागम के दौरान श्री गुरु ग्रंथ साहिब की जगह अन्य ग्रंथ के प्रकाश का शिरोमणि गु प्र कमेटी ने लिया सख़्त नोटिस

श्री अमृतसर : २८ मार्च : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव डॉ रूप सिंघ ने कुराली के निकट गांव खिजराबाद के एक डेरे में करवाए गए समागम के दौरान श्री गुरु ग्रंथ साहिब की जगह किसी अन्य ग्रंथ का प्रकाश करने और रागी सिंघों को धोखे में रखकर गुरबाणी-कीर्तन करवाने की कठोर निंदा की है। उन्होंने कहा कि यह सिक्खी सिद्धांतों, सिक्ख रहित मर्यादा, सिक्ख परंपराओं का घोर उल्लंघन है, जिसे किसी भी कीमत पर बरदाश्त नहीं किया सकता।

जारी बयान में डॉ रूप सिंघ ने कहा कि सोशल मीडिया पर कौम के प्रसिद्ध रागी भाई मनिंदर सिंघ की तरफ से इस सम्बंध में संगत के सामने अपना पक्ष रखा गया है। उन्होंने कहा कि भाई मनिंदर सिंघ के अनुसार उन्हें धोखे से समागम में बुलाकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की जगह किसी अन्य ग्रंथ का प्रकाश किया गया। शिरोमणि गु प्र कमेटी के मुख्य सचिव ने कहा कि यह अकेले रागी जत्थों के साथ किया धोखा ही नहीं, बल्कि सारी कौम के साथ किया विश्वासघात है। उन्होंने इस घटना की सख़्त शब्दों में निंदा करते हुए कहा कि सिक्खी को नुकसान पहुंचाने वाली ऐसी हरकतों से कौम को सचेत रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम के धार्मिक ग्रंथ केवल श्री गुरु ग्रंथ साहिब हैं और इस पवित्र ग्रंथ के समान अन्य किसी दुनियावी ग्रंथ का प्रकाश नहीं किया जा सकता। डॉ रूप सिंघ के अनुसार उक्त मामले के सम्बंध में तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ की तरफ से पड़तालिया कमेटी गठित

Final

की गई है। उन्होंने संगत से अपील की कि वह सिक्खी सिद्धांतों का नाश करने वाले ऐसे लोगों से सचेत रहें और केवल श्री गुरु ग्रंथ साहिब को ही अपना गुरु मानें।

राष्ट्रपति की उपस्थिति में मूल-मंत्र गायन पर किए नृत्य की भाई लौंगोवाल ने की निंदा

श्री अमृतसर : २ अप्रैल : साऊथ अमेरिका के देश चिली की राजधानी सैनटियागो में भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद की मौजूदगी में श्री गुरु नानक देव जी की पवित्र गुरबाणी और मूल-मंत्र के गायन पर नृत्य किए जाने की शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने सख़्त शब्दों में निंदा की है। भारत के राष्ट्रपति के फेसबुक पेज पर डाली गई इस वीडियो को देखने के बाद शिरोमणि गु प्र कमेटी के प्रधान ने इसे गलत करार दिया है। भाई लौंगोवाल ने कहा कि मूल-मंत्र और जपु जी साहिब की पवित्र गुरबाणी की पहली पउड़ी के गायन पर किया गया नृत्य सिक्खी सिद्धांतों, रिवायतों, मर्यादा और जीवन-मूल्यों के विरुद्ध है, जिससे सिक्ख कौम की धार्मिक भावनायों को ठेस पहुंची है। उन्होंने कहा कि भारत के माननीय राष्ट्रपति की उपस्थिति में ऐसा करना और फिर राष्ट्रपति के ही फेसबुक पेज पर डाल कर इसकी प्रशंसा करनी सिक्ख धर्म के सिद्धांतों को चोट पहुंचाने वाली बात है। उन्होंने कहा कि पवित्र गुरबाणी आध्यात्मिक ज्ञान का स्रोत है और इसका केवल संगत में कीर्तन ही किया जा सकता है। गुरबाणी के गायन पर नृत्य करना सिक्ख मर्यादा का हिस्सा नहीं है। सैनटियागो में समागम के दौरान ऐसा करके सिक्ख मर्यादा को चुनौती दी गई है। भाई लौंगोवाल ने कहा कि यह मामला बेहद संजीदा है और इससे संबंधित श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार के साथ विचार कर अगली कार्यवाही की जाएगी।

सिक्ख विरासत की यादगारों के रखरखाव के लिए विरासती सब-कमेटी गठित

श्री अमृतसर : ५ अप्रैल : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने सिक्ख विरासत से संबंधित इमारतों, विरासती यादगारों, ऐतिहासिक वस्तुओं, ऐतिहासिक वृक्षों आदि को बचाने और उनकी संभाल करने के लिए एक विरासती सब-कमेटी का गठन किया है। यह जानकरी शिरोमणि गु प्र कमेटी के मुख्य सचिव डॉ रूप सिंघ ने एक बयान के माध्यम से दी।

डॉ रूप सिंघ ने बताया कि शिरोमणि गु प्र कमेटी के प्रधान भाई लौंगोवाल ने सिक्ख विरासत के रखरखाव के लिए एक सब-कमेटी बनाई है। उन्होंने बताया कि शिरोमणि गु प्र कमेटी के सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता और एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका के अलावा गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी श्री अमृतसर से डॉ करमजीत सिंघ (चाहल), डॉ सुलक्खण सिंघ और प्रो रावल सिंघ आर्किटेक्ट, पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी लुधियाना से इतिहासकार डॉ नरिंदरपाल सिंघ, स. सज्जण सिंघ इंचार्ज सलारगंज म्यूज़ियम हैदराबाद, स. कुलबीर सिंघ (शिरगिल्ल) चीफ इंजीनियर, शिरोमणि गु प्र कमेटी के निर्माण विभाग के सचिव और शिरोमणि गु प्र कमेटी के निर्माण विभाग के ऐक्सियन को इस विरासती कमेटी में शामिल किया गया है। इस कमेटी के को-आर्डिनेटर शिरोमणि गु प्र कमेटी के निर्माण विभाग के उप सचिव होंगे। डॉ रूप सिंघ ने कहा कि बनाई गई सब-कमेटी में अलग-अलग माहिरों को शामिल किया गया है। सब-कमेटी गठित करने का उद्देश्य सिक्ख विरासत को संभालना और ज़रूरत के अनुसर मरम्मत आदि करवाना है। उन्होंने यह भी बताया कि इस सब-कमेटी की सिफारिश और रिपोर्ट के बिना भविष्य में किसी भी ऐतिहासिक इमारत को गिरा कर नवनिर्माण नहीं किया जाएगा।

Final